



सितम्बर 2012

द्वितीय अंक



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक0), उत्तराखण्ड, देहरादून



सितम्बर 2012

द्वितीय अंक



हिमज्योति

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक0),
उत्तराखण्ड, देहरादून





सत्यमेव जयते

महुआ पाल
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखण्ड, देहरादून

संदेश

हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' के द्वितीय अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका में संकलित सामग्री रचनाकारों को प्रोत्साहित करेगी तथा राजभाषा के प्रति निष्ठा पैदा करके इसके व्यापक प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं कार्यालय के उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देती हूँ जिनके अथक प्रयास से ही हम इस पत्रिका को आकार देने में सफल हो सके हैं। मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील करती हूँ कि कार्यालय के कार्यों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करके हिन्दी के विकास में अपना अमूल्य योगदान प्रदान करें।

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक0)

पत्रिका परिवार

संरक्षक एवं निदेशक	:	श्रीमती महुआ पाल, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक0)
प्रधान सम्पादक	:	डा0 आशुतोष शर्मा, वरिष्ठ उपमहालेखाकार (लेखा एवं प्रशासन)
सम्पादक	:	श्री अशोक कुमार गुप्ता, उपमहालेखाकार (निधि)
सलाहकार सम्पादक	:	श्री विनोद कुमार शर्मा, लेखाधिकारी
सहायक सम्पादक	:	श्री भास्करानन्द त्रिपाठी, सहायक लेखाधिकारी : श्री सुशील देवली, कल्याण सहायक : श्री संजीव जखमोला, वरिष्ठ लेखाकार
संकलनकर्ता	:	श्रीमती दीपा पंवार, कनिष्ठ अनुवादक : श्री अशोक सिंह चौधरी, संविदा कर्मी : श्री नीरज नेगी, संविदा कर्मी



सत्यमेव जयते

डा० आशुतोष शर्मा
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(लेखा एवं प्रशासन)

प्रधान सम्पादक का संदेश

इस कार्यालय की गृह पत्रिका 'हिमज्योति' के द्वितीय अंक का प्रकाशन करते हुये मुझे अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। उल्लेखनीय है कि 'हिमज्योति' के प्रथम अंक को राजभाषा विभाग द्वारा शील्ड प्रदान कर सम्पादक मण्डल एवं सभी रचनाकारों का उत्साह वर्धन किया गया तथा पत्रिका को अखिल विभागीय स्तर पर सराहा गया था।

आशा करता हूँ कि पत्रिका उन सभी कर्मचारियों के लिये प्रेरणा स्रोत बनेगी जो अहिन्दी भाषी क्षेत्रों से सम्बन्धित हैं तथा हिन्दी भाषा को सीखने व समझने में रुचि रखते हैं। मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इसके प्रकाशन में अपना सहयोग दिया है।

मैं पत्रिका प्रकाशन के लिये कार्यालय के समस्त सहयोगियों को बधाई देता हूँ।

प्रधान सम्पादक





सत्यमेव जयते

अशोक कुमार गुप्ता
उप महालेखाकार (निधि)

सम्पादकीय

कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका 'हिमज्योति' का यह द्वितीय अंक आपके कर कमलों में है। पत्रिका का प्रथम अंक अत्यन्त अल्पावधि में विभागीय रचनाकारों के अथक प्रयास से ही सम्भव हो पाया था। यह इस कार्यालय का एक नूतन प्रयास है तथा इसके लिए पत्रिका को पाठकों के उत्साह की आवश्यकता है।

2. हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन हेतु नूतन प्रयास को दृष्टिगत रखते हुए सुधी पाठकों की प्रतिक्रियाएं आमंत्रित हैं। आपके सुझावों से निश्चित रूप से हमारा साहस बढ़ेगा, ऐसा हमारा मानना है।

3. आशा है कि पत्रिका के इस अंक में संकलित सामग्री रचनाकारों को प्रोत्साहित करेगी और पाठकों में राजभाषा के प्रति निष्ठा पैदा कर इसके व्यापक प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होगी।

4. मैं उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्तरूप देने में अपना योगदान दिया है।

5. रचनाधर्मियों को उनके सहयोग के लिए तथा पाठकों को पत्रिका में अभिरुचि प्रकट करने के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

सम्पादक

अनुक्रमणिका



विधा	क्रम संख्या	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
कविता	1	हिन्दी सबसे प्यारी भाषा	इफ्तेखार अहमद	
	2	तलाश	सुशील देवली	
	3	माँ का आंचल	अशोक सिंह चौधरी	
	4	पहाड़	भास्करानन्द त्रिपाठी	
	5	अन्तर्द्वन्द	भारतेन्दु गुप्ता	
	6	नर्हीं चिड़िया	अशोक सिंह चौधरी	
	7	अनूठा बचपन	संजीव जखमोला	
	8	आजाद देश के गुलामों	संजीव जखमोला	
	9	जीने की चाह	महावीर सिंह रावत	
	10	राही	अशोक सिंह चौधरी	
	11	भ्रष्ट अगर मानव ना होता	प्रहलाद सिंह	
	12	घर की दीवारें	महावीर सिंह रावत	
गज़ल	13	गौरेया	सुशील देवली	
	14	दोस्त और यादें	देवचन्द	
	15	मुसाफिर	सुशील देवली	
	16	नहीं मिलती	सुशील देवली	
लेख एवं संस्मरण	17	भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग के लिए विशिष्ट चिन्ह (लोगो) को अंगीकार्य करना	अमरजीत सिंह	
	18	जाने कहां होगी वह	दीपा पंवार	
	19	राजजात यात्रा	अशोक सिंह चौधरी	
	20	लोकपाल बनाम् जन लोकपाल	बी०एल० श्रीवास्तव	
	21	कैलाश मानसरोवर यात्रा	रामबीर सिंह	
	22	स्वर्ग की यात्रा	भारतेन्दु गुप्ता	
विचार मन्थन	23	हिन्दी साहित्य ?	डा० आशुतोष शर्मा	
	24	हिन्दी पत्र-व्यवहार में अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग	विनोद कुमार शर्मा	
	25	समय का महत्व	एन०के० सुब्रह्मणियन	
योग-स्वास्थ्य	26	योग निद्रा-तनाव से मुक्ति	अरूण कुमार चौधरी	





वियोगी होगा पहला कवि
आह से निकला होगा गान
निकल कर नयनों से अविरल
बही होगी कविता अन्जान

-सुमित्रा नन्दन पन्त

कवितायें.....



हर की पौड़ी (हरिद्वार)



राफ्टिंग (ऋषिकेश)

हिन्दी सबसे प्यारी भाषा



इफ्तेखार अहमद
सहायक लेखाधिकारी

हिन्दी सबसे प्यारी भाषा,
हिन्दी सबसे न्यारी भाषा,

सब कर्मचारी इसमें कार्य करें,
कार्यालय का नाम करें,
है यही मेरी अभिलाषा।

हिन्दी सबसे प्यारी भाषा,
हिन्दी सबसे न्यारी भाषा,

सब भाषाओं में है यह सरल,
जैसे झील में खिला हो कमल,
नाम दिया है इसे राजभाषा।

हिन्दी सबसे प्यारी भाषा,
हिन्दी सबसे न्यारी भाषा,

देश का यह सम्मान बढ़ाती,
देश का यह है मान बढ़ाती,
एकता की तस्वीर यह भाषा।

हिन्दी सबसे प्यारी भाषा,
हिन्दी सबसे न्यारी भाषा,

विदेशी भाषा से अब नाता तोड़ो
हिन्दी से अब नाता जोड़ो,
है यही मेरी आप सबसे आशा।

हिन्दी सबसे प्यारी भाषा,
हिन्दी सबसे न्यारी भाषा,



तलाश



सुशील देवली
कल्याण सहायक

कूड़े के ढेर में कल को तलाशते
चमकीली आंखों से सपने निहारते ।।
हार्थों से अपने आज को तराशते
कंधों से अपनी छत को संभालते ।।
पंजों से लम्बी दोपहरियां मापते
गंदे नाले की ठंडक को भापते ।।
अक्षरों के जाल में शब्दों को मापते
बचपन के आंगन से दूर
झूठ के ढेर में ।।
सच को बीनते कुछ बच्चे..... ।।



- सुख और आनन्द ऐसे इत्र हैं जिन्हें जितना अधिक आप छिड़कोगे, उतनी ही अधिक सुगन्ध आपके अन्दर जायेगी ।

—अमेरसों

- नमस्कार केवल बूढ़ों को ही नहीं ज्ञानियों को भी अत्यन्त आवश्यक है, चाहे वे आयु में छोटे क्यों न हों ।

—पंचतंत्र

“माँ का आँचल”

(माँ का दुलार कभी कम नहीं होता और माँ जैसा कोई रिश्ता नहीं होता)



अशोक सिंह चौधरी

संविदा कर्मी

हंसते-खेलते गुजरी जिन्दगी
ऐसा सुख है मैंने पाया,
रो पड़ता था मैं जब कभी
गोद में उठाकर तूने टहलाया,
कितना अद्भुत है माँ
तेरे आँचल का साया ।

तेरी बातें मेरी शरारतें
बचपन का वो दौर याद आया,
गुजरे सितम कितने भी
फिर भी तेरा प्यार कम ना पाया,
मेरे सब दुःख-दर्द को
तूने अपने में समाया,
कितना अद्भुत है माँ
तेरे आँचल का साया ।

आज दूर हूँ माँ तेरी पनाहों से
जहाँ खुद को अकेला पाया,
ये अहसास मन का
जब तुझको पुकारता गया,
आवाज दो टूक सुनने को
मुझसे रहा ना गया,
कितना अद्भुत है माँ
तेरे आँचल का साया ।

वो जर्मी पर रेंगकर चलना
तब अंगुली पकड़ तूने खिलाया,
कैसे भूलूँगा माँ तेरा ये उपकार
जो है जन्म-जन्म के लिए मैंने पाया,
कितना अद्भुत है माँ
तेरे आँचल का साया ।

प्यार दुलार ने तेरे मुझको
हर वक्त में चलना सिखाया,
ममता की छांव में तेरी
मैंने खुशनसीब खुद को पाया,
माँ कभी ना छोड़ूँगा तेरा आँचल
जिसमें तूने मुझको छिपाया,
कितना अद्भुत है माँ
तेरे आँचल का साया ।



पहाड़



भास्करानन्द त्रिपाठी

सहायक लेखाधिकारी

कितनी कठिन है,
जिन्दगी पहाड़ की ?
कितने सहज,
दिखते हैं, पहाड़ ?

रातें तो कट जाती हैं,
करवट बदल-बदल कर
दिन क्यों हो जाते हैं, पहाड़ ?

आदि पुरुषों की,
जन्मस्थली थी, पहाड़ ।
सप्तर्षियों की,
कर्मस्थली थी, पहाड़ ।

अब सुनाई देती है,
भौतिकवाद की क्रूर दहाड़
ज्ञान और तप की,
वे अन्ध गुफायें पूछती हैं,
कहाँ हैं ? कहाँ हैं ?
वह आध्यात्मिक पहाड़ ?

इन्सान के साहस व संघर्ष की,
हृद है पहाड़,
शान्ति और मुक्ति की,
अन्तिम सरहद है पहाड़,

लांघने में,
पैरों की पिण्डलियाँ टूट जाती हैं,
हँसती-खेलती, सैकड़ों,
जिन्दगियाँ रूठ जाती हैं ।

शाम होते ही, सो जाते थे पहाड़,
दिनभर की थकान में, खो जाते थे पहाड़ ।
अब सोते नहीं,
रात भर रोते हैं पहाड़ ।
कथित विकास की,
लालसा को ढोते हैं पहाड़ ।

पहाड़ से निकलती नदियाँ,
निरन्तर जागती रहती हैं ।
अतृप्त आकांक्षाओं को पाने,
निरन्तर भागती रहती हैं ।

पहाड़ का पानी, पहाड़ की जवानी,
मिट्टी सहित बह जाती है ।
समा जाता है जन समुन्दर में,
रह जाता है,
दहाड़ता हुआ, पहाड़ ।



अन्तर्द्वन्द्व



न जाने किस दुविधा में पड़ा है ये मन मेरा
न जाने किस कारण रूका है ये तन मेरा,
मन कहे उड़ जा कहीं दूर गगन में
पर इस देश की माटी बसी मेरे तन में,
जाना चाहे मन दूर अरमानों की खोज
ऐसा क्यों सोच रहा है मन तू रोज,
जवाब बड़ा कटु है, कहे मैला हो चुका है यह वतन
असमानता, गरीबी, -रिश्वतखोरी, बस यही है मेरा वतन।
इसलिए मन कर रहा एक स्वच्छ वतन की आस,
जो मुझे दे कुछ पल की रोशनी हो जो खास,
मन मेरा लिए इस तन को जाना चाहता छोड़ वतन को,
पर याद करेगा मन हमेशा अपनी इस माटी और चमन को।
जब भी होगा अम्बर मेरा,
गरीबी की चीत्कार से अनजान,
भ्रष्टाचार के दावानल से उन्मुक्त,
और सदाचार-सुवास से ओतप्रोत,
ऐसे अपनत्व भरे नभ व वतन की मिट्टी,
जब स्नेहिल हो मुझे बुलाएगी,
तब मैं तेरे द्वार पर दस्तक न दे,
हक से अंदर घुस जाऊँगा।
तब तिमिर रहित धवल गगन में,
मन होगा मेरा अति प्रफुल्लित,
अपनों का ममता भरा अनुराग,
और सबल आलंबन पाकर।
धन्य है धरा, गगन व अपनापन मेरा,
जिसने हरकर मन का अन्तर्द्वन्द्व,
पाया है अक्षय स्रोत यहाँ,
नित वैभव, सुख-समृद्धि का।



भारतेन्दु गुप्ता
सुपुत्र श्री अशोक कुमार गुप्ता
उपमहालेखाकार



नन्हीं चिड़िया



अशोक सिंह चौधरी

संविदा कर्मी

दस्तक देती सूरज की किरणें,
नन्हीं चिड़िया आयी आँगन में।

बच्चों संग कोई राग सुनाती
मन को मेरे छू जाती।।

खेलने को मैं भी जब संग जाऊँ
कुछ खिलाकर पास उसको पाऊँ।

नन्हीं चिड़िया है कितनी प्यारी
दूसरों से है कितनी न्यारी।।

कभी डाल पर कोई राग सुनाती
कभी आसमाँ में ऊँचा उड़ जाती।

घोंसले में जब तुम हो आती
नन्हीं चिड़िया के संग खेलती।



रोज आना तुम आँगन मेरे
मधुर गीत संग नये सवेरे।



गुदगुदाहट

डॉक्टर एक मरीज के पीछे भाग रहा था। एक आदमी ने पूछा
क्या हुआ... ?

डॉक्टर- अरे यार, चार बार ऐसा हुआ है कि ब्रेन का ऑपरेशन
करवाने आता है और बाल कटवाकर भाग जाता है।

शादी के दूसरे दिन बेटी अपनी माँ से - मेरी उनसे लड़ाई
हो गई... !

माँ - शादी में झगड़े तो होते रहते हैं फिक्र मत करो...

बेटी - वो तो ठीक है पर अब लाश का क्या करूँ.. ?

“अनूठा बचपन”



संजीव जखमोला

वरिष्ठ लेखाकार

यादों की गहराई में, ले गया मेरा चंचल मन।

जीवन की इस दौड़ धूप में, ढूँढ़ रहा अपना बचपन।।

छोटे-छोटे पांवों से चलना, वो अपनी ही धुन में उछलना।

जीने का बिंदास अंदाज, स्वच्छंदता का वो अहसास।।

किलकारियाँ मार कर भाग जाना, खुद गिरना फिर खुद सम्भलना।

चिड़ियों की तरह वो चहचहाना, उल्लासों का वो एक तराना।।

वो मस्ती भरी शरारतें, वो अनसुलझी इबारतें।

दादा-दादी की आँखों का तारा, घर का मैं सबसे दुलारा।।

वो माँ के आँचल में छुप जाना, पापा के कंधों पर चढ़ जाना।

वो अपनी जिद पर अड़ जाना, वो इठलाना और तुतलाना।।

मीठी नीदों में सो जाना, वो निश्चल मन वो भोलापन।

निश्चिंतता भरा वो जीवन, कहाँ गया “अनूठा बचपन”।



ख्वाब आँखों में पालकर रखना
ये आसमाँ सम्भाल कर रखना
आज मुमकिन है वो इधर आयें
दीप चौखट पे बाल कर रखना
ये हुनर बस तुझी को आता है
हर बशर को निहार कर रखना

-रशिकान्त

आजाद देश के गुलामों



संजीव जखमोला

वरिष्ठ लेखाकार

मंदिर-मस्जिदों पर झगड़ना
इंसानी रिश्तों को मसलना
मर्यादा की हदों को तोड़ना
रिश्ते नातों को पीछे छोड़ना
रिश्तों का खून
मौसमी जुनून.....?

झूठी ख्वाहिशें
बेमियादी आजमाइशें
आपसी जड़ों को खोदना
जिस्मों को गोदना
भ्रष्टाचार के चरम
अय्याशों के हरम.....?

मुम्बई में बम
गौधरा के कांड
टूटते मंदिर-मस्जिद
बढ़ते शमशान
लुटती अस्मर्तें
जलते इंसान.....?

आस्तीनों में खंजर
आरूषि जैसे मंजर
खेलों में राष्ट्रमण्डल
पाखण्डियों के मठ
आरक्षणों की भरमार
बेरोजगारों की कतार.....?

सड़कों में गड्ढे
जुए-शराब के अड्डे
हड़तालों की आंधी
घोटलों के तूफान
पुलिस की लाचारी
बीमार सत्ताधारी.....?



खादी की आड़
जज्बातों के व्यापार
कानूनी दाव पेंच
लटकते केस
डॉक्टरों की लूट
मरीजों का क्रंदन.....?

काले धन का जाना
महंगाई की मार
दिखावे का चलन
ईर्ष्या और जलन
अपमान के घूँट पीना
घुट-घुट कर जीना.....?

आजाद देश में,
इंसानी वेश में
अपने भ्रम में
चरित्र की दुर्बलताओं के चरम को
“बंद करो”.....“बंद करो”.....“बंद करो”.....।

कर्म मंत्र

- अपनी जिज्ञासा को हमेशा जिन्दा रखें।
- चुनौतियों से घबरायें नहीं।
- असफलता सफलता की पहली सीढ़ी होती है।
- यह विश्वास रखें कि कुछ चीजों को सिर्फ आप ही कर सकते हैं।
- संकल्प गहरा हो, तो साधन उपलब्ध हो ही जाते हैं।

जीने की चाह



महावीर सिंह रावत

वरिष्ठ लेखाकार

इस भरे जहां में
तुम कहां खो गये
तुम्हें खोजने की
मैंने हर मुमकिन
कोशिश की।
दर-दर की ठोकें खाया
आँसूओं का दरिया बहाया।
हर राही से पूछा
उड़ते पंछी से पूछा
कोई तुम्हारा
ठिकाना बता न पाया।
थक हार कर मैंने
प्रभु के दरबार में
सुबह-शाम मन्नतें मांगी
वे भी तुम्हारे बारे में
बताने से कतराते रहे।
फिर भी मैंने
हिम्मत नहीं हारी
इक दिन प्रभु को भी
मुझ पर दया आयी
कहा वत्स!

यही तो जीवन की हकीकत है
जो यहां आया उसे जाना ही है।
कोई आगे तो, कोई पीछे
हर किसी को खोना ही है।
क्यों ? उनकी खोज में
दर-दर भटकते हो
क्यों ? आंसुओं का दरिया बहाते हो
यह हकीकत तो
तुम्हारे साथ भी होनी है
यह सिलसिला
यूं ही चलता रहेगा
आने वाले आते रहेंगे
जाने वाले जाते रहेंगे
कब तक उनको खोजते रहोगे
वे कभी तुम्हें नहीं मिल पायेंगे।
अब मैं
इस हकीकत को
समझ गया था
जीने की चाह में
खोजने की राह
भूल गया था।



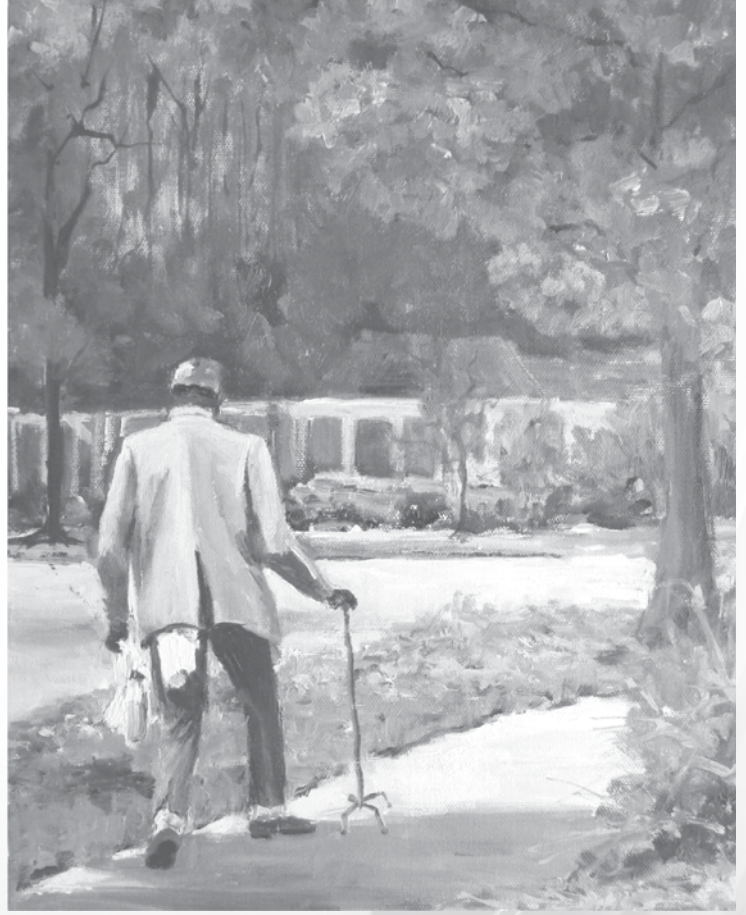
राही



अशोक सिंह चौधरी

संविदा कर्मी

राही मंजिल है किस ओर
कहां तेरा ठिकाना है,
रोज भटकता है किस ओर
कहां घर तेरा अपना है,
हर रोज देखा भटकते अकेला
उलझन सी गलियारों में,
हर रोज देखा
रोता कहीं अकेलेपन में,
खामोशी तेरी बयां करे
किस ओर छोड़ गया अपनों का साथ,
जीवन के इस दौर में
या अपने छोड़ गये तेरा साथ,
किसको तू ढूंढ़ रहा
या राह तू भूल गया,
भटकती आंखों का ये शीशा
पानी में क्यों टूट गया,
क्यों काट रहा तू ये सजा
इन अनजानी राहों में,
दर्द भरी तेरी ये कहानी
अजीब दास्तां बन गयी,
ये दौर तेरा था अपनों का,
वो राहों में गुजर गयी ।।



भ्रष्ट अगर मानव ना होता



प्रहलाद सिंह
वरिष्ठ लेखाकार

भ्रष्ट अगर मानव ना होता

गहराता क्या भ्रष्टाचार

सूरज अगर भ्रष्ट हो जाये
धूप नहीं दिखेगी द्वार
सोचो पवन भ्रष्ट हो जाये
किसके लिए बहेगी बयार

भ्रष्ट अगर मानव ना होता

गहराता क्या भ्रष्टाचार

नदियाँ अगर भ्रष्ट हो जायें
तो कैसा होगा संसार
पतित पावनी गंगा मैया
क्या कर पायेगी उद्धार

भ्रष्ट अगर मानव ना होता

गहराता क्या भ्रष्टाचार

भ्रष्ट अगर पशु पक्षी होते
मार नहीं पाते नर नारि
कुछ ले-दे कर बच जाते
बच जाते उनके परिवार

भ्रष्ट अगर मानव ना होता

गहराता क्या भ्रष्टाचार

भ्रष्ट अगर वन उपवन होते
क्या बच पाता यह संसार
भ्रष्ट अकेला मानव ही है
जो करता है अत्याचार

भ्रष्ट अगर मानव ना होता

गहराता क्या भ्रष्टाचार

भ्रष्ट अगर मानव ना होता

गहराता क्या भ्रष्टाचार ।



घर की दीवारें



महावीर सिंह रावत
वरिष्ठ लेखाकार

अपने घर में
मैं नजर डालता हूँ
ये घर अपना नहीं
पराया लगता है
अपना ही खून
न जाने क्यों बेगाना लगता है।
मानवता के पुजारी का
जैसे इस घर से कोई नाता नहीं
बांह फैलायी माँ से
जैसे घर के बच्चों का कोई वास्ता नहीं।
नजर घुमाई
दीवार पर टंगी तस्वीर देखता हूँ
भारत का एक विशाल रूप था
भारत माँ के हाथों में तिरंगा तो था
परन्तु आँखों में वो प्यार न था।
घर की दीवारें चीख रही थी
ये सब क्या है?
मैंने तुझे आशियाना दिया
तूने ही मुझे बर्बाद कर दिया
मेरे आंगन को क्यों नफरत से भर दिया
क्यों खून के छीटों से इन दीवारों को रंग दिया। क्यों खून.....
इतिहास के पन्नों की स्याही अभी सूखी नहीं
यह कल की ही तो बात है
जब मेरी ये दीवारें सिमट आयीं
क्या तुझे इसका आभास नहीं
क्या वो बेरहम वक्त तुझे याद नहीं। क्या वो बेरहम.....
फिर क्यों?
इतिहास को दोहराते हो



में रोया परदेस में
भीगा माँ का प्यार
दुःख ने दुःख से बात की
बिन चिढ़ी बिन तार
पूरा करके देखिये जीवन
का विस्तार
आँखों घर संसार है
बाहों घर है प्यार
चाहे गीता बाँधिये या पढ़िये कुरान
तेरा मेरा प्यार भी हर पुस्तक का
ज्ञान

- निदा फाजली

गज़लों...



अष्टपाद, कैलाश एवं नन्दी पर्वतों का समूह (जून, 2012)



मानसरोवर झील (जून, 2012)

गौरेया



सुशील देवली
कल्याण सहायक

घर आंगन छज्जे चहचहाने बंद हुए।
घोंसले गौरेया के नजर आने बंद हुए।।

भोर खुलते ही दिया करती थीं आवाजें।
गीत गौरेया के गुनगुनाने बंद हुए।।

ना ही पुराने दिन रहे ना उस जैसे अहसास।
नगमें पुराने दौर के जगमगाने बंद हुए।।

थे मुस्कुराते जिस दौर, फूल पत्ते दरख्तों के।
कई दरख्त बगीचों के मुस्कुराने बंद हुए।।

गुमसुम पड़ा चाँद, सूरज ढूँढता है, अल सुबह।
सो गयी यादों में चिड़िया ख्वाब आने बंद हुए।।



सुना है इधर तरक्की बहुत की है आधुनिक विज्ञान ने।
तब क्यूं इस उम्र में पंख इसके फड़फड़ाने बंद हुए।।



जीने की ललक जब तक सांसों का सफर होता है
हर पल है आखिरी पल सोचो तो असर होता है
इक आशियां बनाना कितना कठिन है यारो
जलती हैं बस्तियां फिर मज़हब में जहर होता
होती बहुत निराशा अखबार खोलते ही
अब हादसों के बाहर क्या कोई शहर होता

—श्यामल सुमन

दोस्त और यादें



देवचन्द
डी0ई0ओ0

दोस्त नहीं बदले दोस्ताना बदल गया ।।
अब तो दोस्ती का पैमाना बदल गया ।।

पहले जो मिलते थे, दिल खोलकर ।
अब मिलने का बहाना बदल गया ।।

पहले होती थी बातें, हँस-हँस कर ।
पर आज बातों पर मुस्कुराना बदल गया ।।

क्या थे वो लम्हें, रहते थे एक साथ ।
आज तो रहने का ठिकाना बदल गया ।।



आज मैं अकेले, बैठकर यही सोचता हूँ ।
अब मेरा हँसना और हँसाना बदल गया ।।

दोस्त नहीं ।।



पहेलियां

1. धूप देख मैं आ जाऊँ, छाँव देख शरमा जाऊँ
जब हवा करे मुझे स्पर्श, मैं उसमें समा जाऊँ
2. अगर नाक पे चढ़ जाऊँ, कान पकड़कर तुम्हें पढ़ाऊँ,
बताओ कौन ?
3. दिन में सोये, रात में रोये, जितना रोये उतना खोये

उत्तर 1. पक्षी, 2. चश्मा, 3. मोमबत्ती

मुसाफिर



सुशील देवली
कल्याण सहायक

धूप छाँव का जिन्दगी से रिश्ता बड़ा पुराना है।
मुसाफिर है हर इक यहाँ-कहाँ किसका ठिकाना है।।

पर्वतों की गोद से जब नदियाँ यूँ सरकती हैं।
बलखाती इस नदी को आखिर समन्दर में समाना है।।

भीड़ है अपनों भरी पर चेहरे गुमनाम हैं।।
किससे करें बातें यहाँ तन्हाई का जमाना है।

इक मुसाफिर ही तो हैं हम सब आखिर इस जहान में।
किसका सफर कब होगा खत्म, कहाँ किसने ये जाना है।।



- टिहरी बांध विश्व का चौथा और एशिया का सबसे बड़ा बांध है जिसका निर्माण कार्य 1978 में आरम्भ किया गया व 2006 में पूरा हुआ।
- 3,500 मीटर ऊँचाई वाले नर और गंधमादन पर्वत के बीच करीब 10 मील लम्बी और 2 मील चौड़ी घाटियों में “फूलों की घाटी” स्थित है।

विचार

- जब आप मुस्कुराते हैं, तब न केवल आपको खुशी मिलती है, बल्कि आप दूसरों के जीवन में भी आशा की किरण संचारित कर देते हैं।
- कभी-कभी आपकी एक मुस्कान, मरुस्थल में जल की बूँद जैसी लाभदायक सिद्ध हो सकती है।
- एक धनी व्यक्ति का धन चोरी या नष्ट हो सकता है, परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति की खुशी व विवेक सुरक्षित रहते हैं।

नहीं मिलती



सुशील देवली
कल्याण सहायक

शहरे जन्त में बस्तियाँ खूबसूरत नहीं मिलतीं ।।

निगाहें मिलती हैं, मगर मिलने की फुरसत नहीं मिलती ।।

नदियाँ बाँटती हैं हर रोज दर्द समुन्दर से ।

समुन्दर को कहीं दर्द बांटने की फुरसत नहीं मिलती ।।

हर बार के मौसम ने यही समझाया है मुझको ।

बुरे दौर में अपनों से ही मुहब्बत नहीं मिलती ।।

जब भी बीते पलों में खुद को देखता हूँ अक्सर ।

इधर मेरे ही आइने से मेरी सूरत नहीं मिलती ।।



रोचक तथ्य

- भारत का अंग्रेजी में नाम इंडिया 'इंडस' नदी से बना है ।
- विश्व का सबसे प्रथम विश्वविद्यालय 700 ईसा पूर्व में तक्षशिला में स्थापित किया गया था ।
- दुनिया में डाकघरों की सबसे बड़ी संख्या भारत में है ।
- दुनिया में सबसे बड़ा नियोक्ता भारतीय रेलवे है । इसने 10 लाख से ज्यादा लोगों को काम पर रखा है ।
- एक पूर्ण रूप से विकसित रक्त दारू वृक्ष (Redwood Tree) के पत्तों से 2 टन से भी अधिक पानी निष्कासित होता है ।

A high-angle photograph of a lush green mountain valley. A waterfall cascades down a rocky cliff on the right side of the image. A river flows through the center of the valley, surrounded by dense green vegetation. The river is filled with white water and rocks, creating a dynamic scene. The background shows more forested mountains under a clear sky.

जिस किसी से जितना भी ज्ञान
मिले, उसे प्राप्त कर लेना चाहिए
और बदले में कृतज्ञता प्रकट करनी
चाहिए

-चाणक्य

लेख एवं संस्मरण...



टिहरी बाँध



मसूरी

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के लिये विशिष्ट चिन्ह (लोगो) को अंगीकार्य करना



अमरजीत सिंह
लेखाधिकारी

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की संस्था के 150 वर्ष पूर्ण होने के समारोह के अवसर पर, भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग एक विशिष्ट चिन्ह (Logo) की प्रत्याशा में था जो इसकी परम्परागत मूल्यों, गतिशीलता तथा प्रगतिशील पर्यवेक्षण दोनों को सम्प्रेषित करे।

इसके लिये विभाग द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर एक खुली प्रतियोगिता का आयोजन किया था और पेशेवर, कलाप्रेमी, व्यक्तिगत और व्यावसायिक संघों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गई थीं। अन्तिम तिथि तक कुल 142 प्रविष्टियाँ विभिन्न स्रोत से प्राप्त हुयी थीं। वैश्य कालेज ऑफ इंजीनियरिंग, रोहतक (हरियाणा) से बी0टेक0 करने वाले एक युवा विद्यार्थी श्री शिवम दुआ द्वारा प्रस्तुत डिजाइन को अन्तिम रूप से चुना गया। उसके विशिष्ट चिन्ह (Logo) का डिजाइन इसलिये चुना गया क्योंकि यह भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के आन्तरिक मूल्यों का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व करता था।

मध्य भाग की शील्ड व्यावसायिक कुशलता के बैज का प्रतिनिधित्व करती है जिसे हम गर्व से धारण करते हैं। बैज में अंकित तराजू का तात्पर्य लेखा परीक्षा में सन्तुलन, समानता तथा न्याय है। बैज में खुली पुस्तक उस ज्ञान को इंगित करती है जिसका लेखापरीक्षक प्रत्येक समय, उसके सम्मुख आने वाली प्रत्येक व्यावसायिक चुनौतियों से एक कदम आगे रहने में अनुसरण करता है।

डिजाइन के आधार पर हरे रंग की पत्तियों का समुदाय और अनाज की चरखी वृद्धि के प्रतीक हैं जो विभाग की बौद्धिक तथा व्यावसायिक वृद्धि के प्रति वचन बद्धता भी है।

यह विशिष्ट चिन्ह (Logo) एक सन्देश भी देता है कि भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग एक अग्रणी दृष्टिकोण रखने वाला विभाग भी है, जो हमेशा परिवर्तनशील वातावरण में विस्तारित चुनौतियों का सामना करने के लिये पर्याप्त रूप से जड़ से परम्परागत मूल्यों तक गतिशील है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्रीमान विनोद राय जी ने भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के लिये एक नया विशिष्ट चिन्ह (Logo) का अनुमोदन कर दिया है।

यह विशिष्ट चिन्ह (Logo) भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग से अग्रसारित किया जा चुका है। जिसमें यह निर्देश है कि इस विशिष्ट चिन्ह (Logo) का विस्तृत प्रचार-प्रसार विभाग के अन्तर्गत किया जाये।

इस विशिष्ट चिन्ह (Logo) के उपयोग के प्रकार:

नया विशिष्ट चिन्ह (Logo) भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के समस्त कार्यालयों में निम्नलिखित के सम्बन्ध में उपयोग में लाया जा सकता है:-

- विजिटिंग कार्ड में।
- आमन्त्रण कार्ड में।
- पत्रावलियों तथा नोट पैड के मुख्यपृष्ठ पर।
- विभागीय विज्ञापन, बैनर, पुस्तिकाओं तथा पृष्ठभूमि प्रदर्शनों आदि में।
- कलगी, ध्वज ऐसे आंशिक परिवर्तन के साथ जो आवश्यक हों, में।
- विभाग की वेबसाइट में।
- विभाग द्वारा निर्गत किये जाने वाले प्रमाण-पत्र में।
- संकेत चिन्ह, नाम पट्ट, शील्ड, पट्टिका के पृष्ठ फलक में।
- विभागीय वाहन में (ऐच्छिक)।
- लेखारीक्षा प्रतिवेदनों में
- कोई अन्य उद्देश्य जिसे भारत का राज्य प्रतीक (अनुचित प्रयोग का निषेध) अधिनियम-2005, तथा भारत का राज्य प्रतीक (प्रयोग का विनियमन) नियम-2007, के प्रावधानों का उल्लंघन किये बिना, उचित समझा जाये।

परिचय पत्रों और कुछ निश्चित प्रकार की लेखन सामग्री जैसे-अर्द्धशासकीय पत्र, साधारण पत्र आदि में भारत का राज्य प्रतीक प्रयोग में जारी रहेगा।

उपरोक्त सन्दर्भित समस्त उपयोग में, विशिष्ट चिन्ह (Logo) विशेष रूप से ऊपर बांयी ओर, या भारत सरकार के विभिन्न विभागों द्वारा जिस प्रकार अनुसरण किया जाता है, प्रदर्शित किया जा सकेगा। यद्यपि लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों में बाह्य पृष्ठ पर ऊपर बांयी ओर विशिष्ट चिन्ह (Logo) का भारत सरकार के प्रतीक चिन्ह (Logo) के साथ उपयोग किया जा सकता है।

भारत के राज्य प्रतीक चिन्ह (Logo) को भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग के विशिष्ट चिन्ह (Logo) में समाविष्ट किया गया है। अतः विशिष्ट चिन्ह (Logo) का प्रयोग, भारत का राज्य प्रतीक (अनुचित प्रयोग का निषेध) अधिनियम-2005 तथा भारत का राज्य प्रतीक (प्रयोग का विनियमन) नियम-2007 के प्रावधानों से विनियमित होगा।

धन्यवाद!



जाने कहां होगी वह



दीपा पंवार

कनिष्ठ अनुवादक

करीब 2 साल पहले की बात है। उन दिनों दिल्ली के एक प्रतिष्ठित हिन्दी अखबार में कार्यरत थी। गाजियाबाद से दिल्ली तक का करीब 15 किमी० का सफर लोकल ट्रेन से तय करती थी। रोजाना की तरह उस दिन भी तेज कदमों से स्टेशन की तरफ बढ़ रही थी। घड़ी की सुई दोपहर के 12:47 बजा रही थी। तीन मिनट बाद मेरी ट्रेन को स्टेशन छोड़ देना था। ठीक एक मिनट पहले मैंने ट्रेन में कदम रखा। खाली सीट देखकर खिड़की की तरफ बैठ गई। तभी एक युवा जोड़ा कोच में दाखिल हुआ। लड़की बमुश्किल 18 साल की होगी और लड़का 20-22 साल का। लड़की का पहनावा देखकर लग रहा था कि वह शादीशुदा है। लेकिन दोनों साथ आये जरूर थे, साथ बैठे नहीं। लड़की मेरे सामने की सीट पर बैठ गयी और लड़का उससे पीठ करता हुआ बैठ गया। देखने में दोनों गरीब परिवार से लग रहे थे। पढ़े-लिखे भी नहीं थे शायद। दुबली-पतली और सांवले रंग की उस लड़की ने लाल साड़ी पहन रखी थी, जो ठीक से नहीं बंधी थी और लड़का एकदम चमकीले कपड़े पहने था।

सहमी-सिमटी उस लड़की पर न जाने क्यों आंखें ठिठक गईं। उसने गले में तो कुछ पहना था, लेकिन हाथ सूने थे। अचानक मन हुआ कि अपने हाथों में से एक-एक चूड़ी निकाल कर उसे दे दूं। मैंने चूड़ियां निकालीं और उसकी तरफ बढ़ाते हुए उससे बात करने की कोशिश की। उसने चूड़ियां लेने से मना कर दिया। मैंने चूड़ियां वापस पहन लीं और उससे पूछा कि कहां जाना है ? उसने कहा, पता नहीं। मुझे आश्चर्य हुआ, आगे पूछा-कौन है तुम्हारे साथ ? उसने उस लड़के की तरफ देखा। मैंने पूछा-वह कौन है तुम्हारा ? उसने मेरी तरफ कातर नज़रों से देखा। मैंने फिर पूछा, तो उसकी आंखें गीली हो गईं। कहने लगी-मेरा आदमी है। मैंने कहा कि, इतनी दूर क्यों बैठा है ? उसने बताया कि वह उसे पसन्द नहीं करता। शादी के बाद से ही उससे दूर रहता है। उसे अपने साथ कहीं लेकर नहीं जाता। मैंने पूछा-फिर आज कहां ले जा रहा है ? उसने बताया कि वह उसे हमेशा के लिए कहीं छोड़ने जा रहा है। कहां, उसे भी नहीं पता। मैंने कहा-तो तुम क्यों जा रही हो उसके साथ, मत जाओ। उसने कहा, नहीं बाद में तो वो मुझसे दूर हो ही जायेगा। कम से कम कुछ देर ही सही, वह मेरी आंखों के सामने तो है। उसे जी भर कर देख तो लूंगी। फिर यह सन्तोष भी रहेगा कि मैंने उसे नहीं छोड़ा।

मेरे मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे। एकटक उसे देख रही थी। समझ में नहीं आ रहा था कि उसे बेवकूफ कहूं, उसके प्यार को सलाम करूं या उसे उसके हाल पर छोड़ दूं। मेरा स्टेशन आ गया था और मुझे न चाहते हुए भी उतरना था। जल्दी-जल्दी मैंने बैग से एक पैन और कागज निकाला, उस पर अपना नाम और मोबाइल नम्बर लिखकर उसके हाथ में थमा दिया और बस इतना ही कह पाई कि जरूरत पड़े तो इस नम्बर पर कभी भी फोन कर सकती हो।

आज इतने दिनों बाद भी उस अनजान लड़की का खयाल मन से जाने का नाम नहीं ले रहा है। क्या पता उसे फोन करने की बात सूझेगी भी या नहीं.....!!



राजजात यात्रा

(विश्व की सबसे बड़ी धार्मिक यात्रा)

अशोक सिंह चौधरी

संविदा कर्मी

उत्तराखण्ड की ऐतिहासिक यात्रा जो करीब 12 वर्ष के समयान्तराल में एक बार होती है। इससे पहले यह यात्रा सन् 2000 में हो चुकी है। यह भव्य यात्रा पहाड़ की संस्कृति व रिवाजों का आइना है, तो वहीं पहाड़ी रीति-रिवाजों के अनुसार 'ध्याणी' (विवाहित बेटी-बहिन) के संघर्षों की दास्तां है। पौराणिक गाथाओं के अनुसार नन्दा देवी गढ़वाल के राजाओं के साथ-साथ कुमाऊँ के राजवंश की ईष्ट देवी थी। ईष्ट देवी होने के कारण नन्दा देवी को राजराजेश्वरी के नाम से भी जाना जाता है।



राजजात यात्रा चमोली जिले के कांसुआ गाँव से ढोल-दमाऊ, डोली-छंतौली, पूजा-पाठ व नगाड़ों के साथ आरम्भ की जाती है। इस यात्रा का मुख्य आकर्षण चार सींगों वाला खाडू (भेड़) होता है। जैसे-जैसे यह यात्रा अपने अगले पड़ाव में अन्य गाँवों से होकर गुजरती है, वैसे-वैसे इस यात्रा में डोलियां व छंतौलियां भी शामिल होती रहती हैं। सर्वप्रथम यह यात्रा कांसुआ गाँव से शुरू होकर ऐरोली, बैनोली, देवल होते हुए नौटी पहुंचती है। नौटी गाँव जो कि नन्दा देवी का सिद्धपीठ है। तत्पश्चात् यह यात्रा नौटी गाँव से शुरू होकर नैणी,

ईडा-बधाण, जाख, सैम, सिमली, कुलसारी, चौपड़ों, लोहाजंग, बाण-बेदनी, पात्तर-नचौंगिया से विश्वविख्यात रूपकुण्ड, शिला समुद्र, हेमकुण्ड से चंदियाघाट, सतोल से घाट होते हुए नन्दप्रयाग और फिर नौटी वापस आकर यात्रा का भ्रमण चक्र पूरा किया जाता है। यह दूरी करीब 280 किमी० है। इसके अलावा, कुमाऊँ से भी अल्मोड़ा, कटारमल और नैनीताल से डोलियाँ नन्दकेशरी में आकर शामिल होती है। इस यात्रा में शामिल चौसिंग्या खाडू (भेड़) जो कि स्थानीय क्षेत्र में राजजात से पहले जन्म लेता है, उसकी पीठ पर दोनों ओर एक थैला रखा जाता है, जिसमें श्रद्धालुओं द्वारा गहने, श्रृंगार सामग्री व अन्य भेंट रखी जाती हैं। हेमकुण्ड में पूजा होने के बाद हिमालय की ओर खाडू सहित प्रस्थान किया जाता है। इस सम्पूर्ण यात्रा के दौरान हेमकुण्ड से नाटी तक की दूरी 280 किमी० पैदल ही तय की जाती है। मान्यतानुसार चौसिंग्या खाडू (भेड़) हिमालय के निकट छोड़ दिया जाता है, जिसके बाद वह आगे चलकर गायब हो जाता है। यह भी मान्यता है कि जिस गौशाला में यात्रा से पूर्व खाडू (भेड़) जन्म लेता है, उस दिन से वहाँ शेर का आना आरम्भ हो जाता है और जब तक खाडू को राजजात को अर्पित ना किया जाय, तब तक शेर वहाँ आता रहता है।



लोकपाल बनाम् जन लोकपाल



बी0एल0 श्रीवास्तव

सलाहकार

आधुनिक भारतीय परिवेश में जन लोकपाल बनाम लोकपाल की चर्चा सर्वत्र गुंजायमान हो रही है। कश्मीर से कन्याकुमारी और गुजरात से बंगाल तक भ्रष्टाचार के विभिन्न स्वरूपों के पौधे अमरबेल की तरह पूर्णतया पुष्पित और पल्लवित हो चुके हैं। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के भ्रष्टाचार वाले धन का विदेशों में जमा होना अगम्य गहराइयों तक पहुँच चुका है। निचले और निजी स्तर पर व्याप्त भ्रष्टाचार का स्वरूप अत्यन्त भीषण, विनाशकारी एवं भयावह-चीत्कार का सृजनकर्ता है। यह न्याय को लीलने वाला असमानता को बढ़ावा देने वाला महाराक्षस है। समस्त शक्तियों का घनीभूत केन्द्रीकरण भ्रष्टाचारक का संवर्धन करता है। राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिवेश में अपनी गहरी पैठ बनाए हुए भ्रष्टाचार की समाप्ति के लिए शक्तियों का विकेन्द्रीकरण अपरिहार्य है। सत्ता भ्रष्ट करती है तथा सम्पूर्ण सत्ता पूरी तरह भ्रष्ट कर देती है। भारत में मोरारजी देसाई ने प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष के रूप में 1966 में भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए लोकपाल तथा राज्यों में लोकायुक्त का प्रस्ताव रखा था। विधेयक जन लोकपाल के अनुसार लोकपाल को किसी भी मामले की जांच करने का अधिकार होगा। उसे इसके लिए किसी से भी अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है। जबकि सरकारी लोकपाल के पास भ्रष्टाचार के मामलों पर खुद या आम लोगों को अपनी शिकायतें राज्यसभा के सभापति या लोकपाल अध्यक्ष को भेजनी पड़ेगी। सरकारी विधेयक में लोकसभा केवल परामर्श दे सकता है। वह जांच के बाद अधिकार प्राप्त संस्था के पास प्रतिवेदन भेजेगा। मंत्रिमंडल के सदस्यों पर प्रधानमंत्री फैसला करेंगे। वहीं जन लोकपाल सशक्त संस्था होगी। उसके पास किसी भी भ्रष्ट सरकारी अधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई करने की क्षमता होगी। सरकारी विधेयक में लोकपाल के पास पुलिस शक्ति नहीं होगी। जन लोकपाल न केवल प्राथमिकी दर्ज करा पाएगा, बल्कि उसके पास पुलिस फोर्स भी होगी। लोकपाल में शिकायत झूठी पाए जाने पर शिकायतकर्ता पर केवल जुर्माना लगाने का प्रावधान है।

सरकारी लोकपाल का अधिकार क्षेत्र संसद, मंत्री और प्रधानमंत्री के मामले में सीमित रहेगा, जबकि जन लोकपाल के दायरे में प्रधानमंत्री, उच्चाधिकारी और न्यायाधीश आयेंगे। लोकपाल में तीन सदस्य होंगे जो सभी सेवानिवृत्त न्यायाधीश होंगे। जन लोकपाल में दस सदस्य होंगे और इनका एक अध्यक्ष होगा, जिनमें चार का कानूनी पृष्ठभूमि से होना अनिवार्य है, बाकी का चयन किसी भी क्षेत्र से होगा। सरकारी लोकपाल को नियुक्त करने वाली समिति में उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, कानून और गृहमंत्री दोनों सदनों के नेता व विपक्ष के नेता होंगे, जबकि जन लोकपाल विधेयक में चयनकर्ता के रूप में मुख्य चुनाव आयुक्त, भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक, न्यायिक क्षेत्र के सम्मानित व्यक्ति और भारतीय मूल के नोबेल व मैग्सेसे पुरस्कार विजेता होंगे। लोकपाल को छह महीने से लेकर एक साल के भीतर जांच पूरी करनी होगी, जबकि जन लोकपाल विधेयक के अनुसार जांच और न्यायिक कार्यवाही एक साल में पूरी सम्पादित होनी चाहिए। लोकपाल को नौकरशाहों और न्यायाधीशों के खिलाफ जांच का कोई प्रावधान नहीं है, जबकि जन लोकपाल को नौकरशाहों और न्यायाधीशों के खिलाफ जांच करने का अधिकार है। लोकपाल को भ्रष्ट अफसरों को बर्खास्त करने का अधिकार दिया गया है।

राज्यों में लोकायुक्त की व्यवस्था की गई है। लोकायुक्त का कार्यकाल 6 वर्ष का होता है और उसकी नियुक्ति राज्यपाल करता है। वह राज्य में भ्रष्टाचार की शिकायतों की जांच कर अपना प्रतिवेदन देता है। वर्तमान में देश के 17 राज्यों में लोकायुक्त नियुक्त है।

वस्तुतः लोकपाल/जन लोकपाल एवं लोकायुक्त की नियुक्ति से भ्रष्टाचार की दानवी-दुष्प्रवृत्तियों का पूर्णतः परिहार नहीं किया जा सकता है। भ्रष्टाचार के बहुआयामी स्वरूप के समूल विध्वंशी के लिए सामाजिक जन-जागरण एवं जन चेतना का आविर्भाव, स्फुरण एवं उसका सर्व-व्यापक उन्नयन बहुत ही आवश्यक है।

भ्रष्टाचार नासूर बन गया है जो कैंसर की तरह लोकतंत्र की संस्थाओं को खाए जा रहा है। समस्या अति गम्भीर है, इसमें सर्वसहमति है। लेकिन जो हल नागरिक समाज की तरफ से रखे गए हैं, उनसे समस्या का समाधान नहीं होने वाला है। नागरिक समाज का कहना है कि जन लोकपाल को हम महाशक्तिशाली बनायेंगे, तो अधिकारी डरकर अपनी भ्रष्ट आदतें छोड़ देंगे। ऐसा हो सकता तो कब का भ्रष्टाचार कम हो गया होता, क्योंकि पहले से काफी सख्त कानून है। कमी अगर है तो न्याय प्रणाली में, जो इतनी कमजोर है कि मुकदमे दशकों तक चलते हैं। जब तक यह नहीं बदलेगी भ्रष्टाचार कम नहीं होगा। अन्य देशों से काला धन वापस लाना आसान नहीं और उसके ऊपर समस्या है कि जिन अधिकारियों के हाथों में है इस काले धन को वापस लाना, वे फरिश्ते नहीं हैं। भ्रष्टाचार को कम करने का पुण्य कार्य तभी सम्भव होगा, जब लोकतांत्रिक संस्थाओं को इतना शक्तिशाली बना दिया जाए कि सत्ता में बैठने वालों को नियंत्रण में रखना आसान हो जाए, वरना तमाशा होगा सिर्फ समाधान नहीं।

क्या हवायें थीं कि उजड़ा प्यार का वह आशियाना
कुछ न आया काम तेरा शोर करना, गुल मचाना
नाश कि उन शक्तियों के साथ चलता जोर किसका
किन्तु ऐ निर्माण के प्रतिनिधि, तुझे होगा बताना
जो बसे हैं वे उजड़े हैं प्रकृति की जड़ नियम से
पर किसी उजड़े हुए को फिर बसाना कब मना है ?
है अंधेरी रात पर दीपक जलाना कब मना है ?

-हरिवंश राय बच्चन

कैलाश मानसरोवर यात्रा



रामबीर सिंह,
वरिष्ठ लेखाधिकारी

वेद-पुराणों एवं कथा-कहानियों में पढ़ी व सुनी गई पवित्र कैलाश मानसरोवर पर विद्यमान देवों के देव महादेव भगवान शिव के साक्षात दर्शन करने की अभिलाषा मन में तब से जाग्रत थी, जब मैंने वर्ष 1997 में बर्फानी बाबा अमरनाथ जी की यात्रा पूर्ण की थी। मीडिया के विभिन्न माध्यमों में सुन-देखकर प्रतिवर्ष मन में विचार आता था कि श्रृद्धालु इतनी कठिन व साहसी यात्रा को कैसे ईश्वर में आस्था/विश्वास रखकर पूर्ण करते होंगे। यहां तक कि पूर्व वर्षों में समुद्र की सतह से लगभग 22,700 फीट की ऊँचाई, कंकपाती ठंड, माइनस 4-5 डिग्री के तापमान में बर्फीली हवाओं के बीच सफलता पूर्वक यात्रा पूर्ण कर चुके महानुभावों से भी उनके



अनुभवों का वृत्तान्त सुनकर मन में बड़ी सिहरन और चमत्कारिक यात्रा की सुखद अनुभूति होती थी। उनके अनुभवों, मौसम व पर्यावरण की विपरीत परिस्थितियों का विचार आने पर लगा कि इस यात्रा को मैं नहीं कर पाऊँगा, परन्तु दूसरे ही पल विचार आता कि अन्य यात्रियों ने भी सफलतापूर्वक यात्रा की है, तू क्यों नहीं कर सकता...!

अकस्मात् मार्च, 2012 में मेरे दो मित्रों ने मुझे दूरभाष के माध्यम से पवित्र कैलाश की यात्रा करने हेतु प्रेरित किया और एक सप्ताह में अन्तिम निर्णय से अवगत कराने हेतु अनुरोध किया। मेरी दबी हुई मनोइच्छा फिर जाग्रत हुई और मन में भिन्न-भिन्न भाँति की परिकल्पनाएँ हिलोरे मारने लगीं। सुबह उठते ही ईश्वर के प्रति श्रद्धा/विश्वास के साथ दृढ़ निश्चय कर लिया कि मैं भी पवित्र कैलाश के साक्षात दर्शन हेतु जरूर जाऊँगा। निर्णय लेने के बाद तन-मन-धन से यात्रा के लिए आवश्यक कार्यों जैसे-पासपोर्ट, चीन सरकार द्वारा यात्रा की अनुमति प्राप्त करना, कार्यालय से अनापत्ति प्रमाण-पत्र लेना आदि में जुट गया। अन्ततः वह दिन आ गया जिस दिन से यात्रा प्रारम्भ होनी थी।

हमारे दल में कुल 42 यात्री, जिनमें 8 महिलायें व 34 पुरुष थे, के साथ यात्रा का पहला पड़ाव दिल्ली एयरपोर्ट से प्रस्थान कर काठमांडू, नेपाल था। दो दिन पार्क विलेज होटल में ठहरने के दौरान यात्रा गाइड एवं कोर्डिनेटर द्वारा हिन्दू/बौद्ध धर्म के काठमाण्डू स्थित विश्व प्रसिद्ध पशुपतिनाथ जी/बुद्धाधाम मन्दिरों के साथ स्थानीय पर्यटक स्थलों का दर्शन कराया गया। इसके अलावा आगे की यात्रा के दौरान होने वाली कठिनाइयों एवं उनसे निपटने के तौर-तरीकों/सावधानियों को विस्तार से समझाया गया। तीसरे दिन हमें वातानुकूलित बस द्वारा नेपाल-चीन सीमा तक पहुँचा दिया गया।

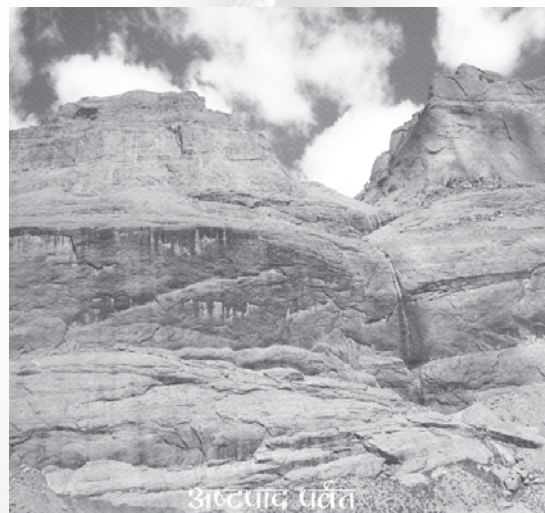
चीन सीमा के पोस्ट पर दो घण्टों तक प्रतीक्षा के बाद हमारे दल का नम्बर आ गया था। चीनी पोस्ट के सुरक्षा अधिकारियों द्वारा दल के सभी सदस्यों के वीजा-पासपोर्ट एवं व्यक्तिगत सामान की गहन जाँच उपरान्त हमें चीन में प्रवेश दिया गया। चीन सीमा में प्रवेश करते ही दल के सभी सदस्यों ने भगवान कैलाश से कामना की, कि वह हमारी यात्रा सकुशल पूर्ण करें। वहाँ पहले से ही हमारे दल की प्रतीक्षा में वाहन जो सम्पूर्ण यात्रा हेतु तैयार थे, में सवार होकर आगे की

यात्रा हेतु निकल पड़े।

लगभग 450 किमी० की यात्रा के बाद शाम 7 बजे तिब्बत स्थित झांगमू शहर पहुँच गये थे। शारीरिक थकान की वजह से किसी तरह खाना ग्रहण करके सभी यात्री पहले से निर्धारित होटल में शीघ्र ही गहरी नींद में सो गये। अगले दिन सुबह नाश्ता करके यात्रा के आगामी पड़ाव नियालम शहर पहुँच गये। यहाँ चारों ओर ऊँची चोटी एवं हरे-भरे प्राकृतिक दृश्य बड़े ही मनोहर एवं हृदय स्पर्शी थे। दूसरे दिन कैलाश पर्वत की यात्रा का रिहर्सल करने की योजना के तहत तीन किमी० ऊँची पहाड़ी पर चढ़ने के लिए सुबह से ही तैयारी कर ली गई थी। शिखर पर पहुँच कर बर्फीली हवाओं के मध्य मौज-मस्ती एवं पहाड़ी के चारों ओर के मनोरम एवं बर्फ से ढकी चोटियों का दृश्य कैमरे में कैद करके एक घंटे में नीचे उतर आये। रात 8 बजे दल में शामिल चिकित्सक द्वारा सभी की जाँच करने पर ज्ञात हुआ कि कुछ यात्रियों के रक्त में भी ऑक्सीजन का स्तर कम, पल्स रेट अधिक एवं रक्त चाप भी सामान्य से 10-20 प्रतिशत ज्यादा था। उसी दिन हमें 350 किमी० की यात्रा करके मानसरोवर झील पहुँचना था जो समुद्री सतह से 17,250 फिट की ऊँचाई पर विश्व में सबसे बड़ी लगभग 120 स्व्वायर किमी० की परिधि में स्थित है।

नियालम तथा मानसरोवर की दूरी के मध्य में चारों ओर दूर-दूर तक बिना पेड़-पौधों एवं बर्फ से ढकी ऊँची-ऊँची पहाड़ियों एवं सड़क के दोनों ओर भेड़ एवं प्रसिद्ध याक के झुंड के झुंड अठखेलियां करते दिखाई पड़ रहे थे जो यात्रा का रोमांच बढ़ा रहे थे। सभी यात्री धूप निकली होने के बाद भी सर्द हवाओं के कारण वाहन की खिड़की खोलने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। पेट की भूख शान्त करने के लिए बैठने हेतु जगह की तलाश थी। 20-30 किमी० आगे जाने पर एक नदी दिखाई पड़ी, इतनी ऊँचाई पर अविरल बहती नदी के बारे में उत्सुकता वश गाइड से जानने पर ज्ञात हुआ कि यह हमारे अपने भारत देश के उत्तर पूर्वी राज्य आसाम में बहने वाली विश्व प्रसिद्ध ब्रह्मपुत्र नदी है जो इन्हीं पठारों के मध्य से निकलती है। सभी ने दोपहर के भोजन हेतु उतरकर हाथ-पैरों को सुन्न करने वाले ब्रह्मपुत्र नदी के जल से आचमन किया और अपने को सौभाग्यशाली मानते हुए ईश्वर की कृपा के लिए आभार व्यक्त किया। भोजन अवकाश के बाद अगले पड़ाव मानसरोवर के लिए प्रस्थान किया। 2 घंटे का सफ़र तय करके शाम के चार बजे सभी मानसरोवर झील के किनारे पहुँच गये थे। 2 घंटे विश्राम करने एवं रात का भोजन करते समय दल के गाइड ने बताया कि पूर्णिमा की रात ब्रह्म मुहूर्त में स्वर्ग लोक से आकर सभी देवी-देवतागण मानसरोवर में स्नान करते हैं। उसी समय एक अद्भुत दिव्य ज्योति के दर्शन प्राप्त होते हैं। जो यात्री दिव्य ज्योति के दर्शन करना चाहें, वे रात 1 से 4 बजे के मध्य अपनी मनोकामना पूर्ण कर सकते हैं। सौभाग्य से अगले दिन गुरु पूर्णिमा थी और हमने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि इस अवसर को हाथ से नहीं जाने देंगे। सुबह उठने पर सभी यात्री पवित्र सरोवर में स्नान करने के लिए तैयार थे परन्तु मौसम बहुत सर्द था। अतः किसी भी यात्री की सरोवर तक जाने की हिम्मत नहीं थी। सभी ने भगवान कैलाश से प्रार्थना की जिसने चमत्कार किया और आधे-एक घण्टे में धूप के दर्शन होने लगे। 11 बजे ठंड की चिन्ता किये बिना स्नान करने हेतु मानसरोवर के अन्दर थे। स्नान करने के पश्चात् सरोवर के किनारे बैठकर सभी यात्रियों द्वारा लायी गई पूजा सामग्री, धार्मिक मंत्रोच्चारण एवं वैदिक रीति से हवन किया गया।

सुबह हमें आगे की यात्रा हेतु दारचेन शहर पहुँचना था जो मानसरोवर से 150 किमी० की दूरी पर स्थित है। यहाँ एक रात ठहरकर हमें पवित्र कैलाश पर्वत की परिक्रमा हेतु तैयारी करनी थी। कुछ यात्रियों ने घोड़े बुक कर लिये लेकिन



अष्टपाद पर्वत

अधिकतर ने पैदल परिक्रमा करने का निश्चय कर लिया था। सबसे महत्वपूर्ण चौंकाने वाला तथ्य यह था कि मौसम के खराब होने, बर्फीले तूफान, बर्फबारी एवं बारिश होने जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी तीन चरणों क्रमशः 16, 23 एवं 15 किमी० के पड़ाव के मध्य कोई आश्रय स्थल नहीं था जिसमें छुप कर उक्त आपदा से बचाव किया जा सके। पूरे दिन होटल में रुक कर इन्तजार करना भारी पड़ रहा था इसलिए हमने यात्रा गाइड व कोर्डिनेटर के परामर्श से जैन धर्म के गुरु; ऋषभ देव जी के पवित्र पर्वत अष्टपाद के दर्शन की इच्छा प्रकट की। शीघ्र ही 20-22 यात्री हमारी इच्छा से सहमत हो गये। 25 किमी० की यात्रा तय करके हम अष्टपाद पर्वत पर पहुँच चुके थे। वहाँ से कैलाश पर्वत के दर्शन स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे। कैलाश पर्वत के एक ओर भगवान शिव के वाहन नन्दी की आकृति के समान नन्दी पर्वत तो दूसरी ओर शक्ति स्वरूप माँ पार्वती का पर्वत विद्यमान था। गाइड ने हमें निर्देश दिया कि तुरन्त वापस आ जाओ, मौसम खराब होने वाला है। वापस विश्राम स्थल पहुँचने से पहले ही इतनी भीषण बर्फबारी शुरू हो गयी जिसकी हमें कल्पना नहीं थी। आधे घण्टे में ही एक फीट तक बर्फ जम चुकी थी। अगले दिन सुबह ही परिक्रमा के लिए निकलना था। गाइड ने निर्देश दिया कि चलने से पहले गर्म कपड़े, मौजे, कैप, मफलर, टॉर्च, पानी, मास्क, रेन कोट, जरूरी दवाएँ आदि पहनकर/रखकर चलें। यह भी निर्देशित किया कि सभी यात्री अपना मनोबल बनाये रखें, आपस में बातें ना करें और ईश्वर में आस्था बनाये रखें। अगले तीन दिनों में पर्यावरण में ऑक्सीजन की भारी कमी के बावजूद तीन चरणों में कुल 54 किमी० की यात्रा करनी थी। अन्त में वह दिन आ गया, जिस दिन परिक्रमा शुरू करनी थी। सभी यात्रियों को सुबह 3 बजे नींद से जगा दिया गया। 4 बजे नाश्ता कराने के बाद लंच पैकेट दे दिया गया। वाहनों से पूरे दल को यमद्वार तक पहुँचा दिया गया। यमदेवता की आराधना, परिक्रमा और दर्शन के बाद हमारी पैदल यात्रा आरम्भ होनी थी। अतः सभी यात्रियों की भेषभूषा, जरूरी सामान की किट जाँच की गई और सभी को एकत्र करके श्रद्धापूर्वक भगवान भोले नाथ से सभी की यात्रा मंगलमय, निर्विघ्न पूर्ण हो, की प्रार्थना की गई। इसी स्थान पर यात्रा पूर्ण करने के बाद पुनः मिलने की आशा के साथ हमारी पवित्र कैलाश पर्वत की यात्रा प्रारम्भ हो चुकी थी। हमारे दल के अलावा अन्य दलों को मिलाकर लगभग 530 यात्री परिक्रमा में शामिल थे। यह 16 किमी० की यात्रा परिक्रमा का प्रथम भाग था जिसे दोपहर 12 बजे तक पूरा करके बेस कैंप डेरापुक पहुँचना था।



कैलाश व नन्दी पर्वत

सुबह के 10 बजे तक आधे रास्ते को आसानी से पार करके आधा घण्टे विश्राम किया और थोड़ी पेट पूजा की गयी। पुनः यात्रा शुरू करने के एक घण्टे पश्चात् पैदल चलने में कुछ यात्रियों को कठिनाई होने लगी। चलते-चलते दोपहर के 2 बज चुके थे लेकिन परिक्रमा के अन्तिम 2 किमी० शेष थे। आखिर बेस कैंप डेरापुक आ गया और पहले से निर्धारित विश्राम गृह के कमरों में घुसते ही कैलाशपति को शुक्रिया अदा किया। रात का खाना खाने के बाद दूसरे चरण की यात्रा की तैयारी करके जल्दी सोने चले गये। दूसरे दिन फिर सुबह 3 बजे नींद से जगा दिया गया। 4 बजे नाश्ता व लंच पैकेट लेकर 5 बजे परिक्रमा के लिए निकल पड़े। उस समय तक भी आसमान में तारे जगमगा रहे थे। हाथ में टॉर्च लिये जरूरी चीजों का बैग सेना के जवानों की भाँति पीठ पर बाँधकर चल दिये। यह यात्रा 23 किमी० लम्बी तथा सबसे कठिन, जोखिम भरी, समुद्र तल से 22,500 फीट की ऊँचाई पर चढ़ाई करके पूर्ण करनी थी। यात्रा शुरू होते ही शंखनाद की भाँति भोले शंकर कैलाश पति के जयकारों से पूरा वातावरण गूँज गया। 6 किमी० के बाद जैसे ही ऊँची चोटियों पर कदम पड़े तो, ऑक्सीजन की कमी व बर्फीली हवाओं के थपेड़ों से सभी के चेहरे सर्द हो गये और सांसे फूलने लगीं। प्रत्येक 15 मीटर पर बैठकर आराम करते हुए आगे बढ़ते जा रहे थे कि अचानक बर्फबारी शुरू हो गयी। सभी की सांसें अनहोनी की आशंका से थमने लगीं।

इस प्रकार हमारी 15 दिन की यात्रा पूर्ण हो चुकी थी, तीन दिन बाद काठमाण्डू के रास्ते दिल्ली पहुँच चुके थे। घर पहुँच कर ऐसा स्वागत किया गया जैसे हम लोग बहुत बड़ी विजय प्राप्त करके लौटे हों। मैंने भी दिल्ली के उन मित्रों जिन्होंने मुझे यात्रा करने की प्रेरणा दी एवं पूरी यात्रा में सहयोग किया, को साधुवाद दिया। मैं अपनी धर्मपत्नी को भी धन्यवाद देना चाहूँगा जिसने मुझे यात्रा पर जाने के लिए एक ही बार में स्वीकृति प्रदान कर दी थी। साथ ही अपने कार्यालय के सहकर्मियों/अधिकारियों द्वारा यात्रा के लिए दी गई शुभकामनाओं एवं आशीर्वाद के लिए कोटि-कोटि धन्यवाद...!!



स्वर्ग की यात्रा



भारतेन्दु गुप्ता
सुपुत्र श्री अशोक कुमार गुप्ता
उपमहालेखाकार

इसकी शुरुआत तब हुई, जब 3 दोस्तों ने, इससे पहले कि उनकी जिंदगी ढर्रे पर चलकर नीरस हो जाती, स्वर्ग की यात्रा का फैसला किया। उन्होंने लेह-लद्दाख के लिए अपना सामान बांधा। हमारी यात्रा दिल्ली से शुरू हुई, जहां से हमने लद्दाख के ठंडे पहाड़ों की यात्रा, वो भी बाइक पर, करने के लिए जरूरी सामान इकट्ठा किया। हम दिल्ली से हिमाचल टूरिज्म की बस में चढ़े और 16 घंटों में मनाली पहुंच गए। पर मनाली की भीड़-भाड़ और गर्मी ने हमें वहां ज्यादा वक्त बर्बाद न करते हुए लद्दाख के लिए जल्द निकलने पर मजबूर कर दिया। हमने मनाली से किराए पर एक कार ली, जिसे लेह पहुंचने में करीब दो दिन लगे।

रोहतांग पास के बाद की सड़क बेहद चुनौतीपूर्ण थी। उससे गुजरते वक्त लगा कि यहां आकर हमने गलती कर दी है, लेकिन स्वर्ग को छूने के विचार भर ने हमें बारह लाचा ला (स्थानीय भाषा में ला का मतलब रास्ता होता है) की बर्फीली हवाओं को झेलने की शक्ति दी।

लेह पहुंचने के बाद हम भारतीय मिलिट्री के गेस्ट हाउस में रुके, जो हमारे लिए सम्मान की बात थी। वहां हमने आर्मी स्मारक देखा, जिसकी दीवार पर हर तरफ कारगिल युद्ध के वीरों की तस्वीरें थीं। हमने उन्हें सलाम किया, करते हैं और

हमेशा करेंगे। कहते हैं लेह स्तूपों का शहर है। हमने वहां बहुत से स्तूप देखे, लेकिन शांति स्तूप की बात ही अलग थी। हमने पत्थर साहिब गुरुद्वारा, मैगनैटिक पहाड़ी और लेह पैलेस भी देखा।

लेह में दूसरे दिन जब हमें इस बात का यकीन हो गया कि हम लद्दाख की हाड़ कंपा देने वाली ठंड को बर्दाश्त कर पाएंगे, हमने मशहूर पैगॉन्ग झील देखने का फैसला किया। यह झील बॉलिवुड कलाकार आमिर खान की एक मशहूर फिल्म श्री इंडियट्स में दर्शाने के बाद से मशहूर हुई थी।

यह एक बड़ी झील है, जिसका सिर्फ 30% हिस्सा भारत में दिखाई देता है, बाकी का चीन में है। यह लगभग समुद्र के जैसी लगती है और सुबह-सुबह सूरज की किरणों में इसका पानी मोतियों की तरह चमकता है। हमने वहां कुछ वक्त गुजारा और उसी दिन लेह वापस आ गए।



लेह में तीसरा दिन सबसे मजेदार था। हमने स्थानीय बाजार से रॉयल इन्फील्ड बुलेट किराए पर ली और नुब्रा घाटी वाया खर्दुंग ला के लिए रवाना हो गए। शुरू से हमें इस बात का पता था कि बाइक पर यात्रा करना मुश्किलों भरा होगा। पेट्रोल की टंकियां भरी थीं, हमने खुद को बाइक के गीयर्स और बुलेट की तेज आवाज में उलझा लिया था। हिमपात के दौरान बाइक चलाते और बेहद ऊंचाई पर ली चाय की चुस्कियों के साथ (इसे दुनिया का सबसे ऊंचा टी-स्टॉल कहा जा सकता है) हम सही-सलामत खर्दुंग ला पहुंच गए। चाय की शानदार खुशबू ने थकान से चूर हमारे शरीरों में वहां के मौसम से लड़ने को जान डाल दी थी। लिहाजा नुब्रा घाटी जाने के लिए हमने फिर बुलेट में किक मार दी।

नुब्रा घाटी में दो बड़े पड़ाव हैं। एक है दिस्कट, जहां हमने एक पुरानी मोनेस्ट्री देखी। काफी लोगों को नहीं पता, कि महान चंगेज खान की, दरअसल इसी मोनेस्ट्री की सीढ़ियों पर मौत हुई थी। कहते हैं उनका एक हाथ अभी भी वहां दिखाई देता है। वह नष्ट नहीं हुआ और न ही उसे सुरक्षित रखा गया। मोनेस्ट्री में दरअसल काली माता की पूजा होती है और अब वही उसकी संरक्षक हैं। कुछ किलोमीटर आगे एक गांव है हंडर, जो दो पीठ वाले ऊंटों और बालू के टीलों के लिए मशहूर है। दिक्सिट में हम एक रात रुके और अगले दिन लेह के लिए वापसी की।

लेह में आखिरी दिन थोड़ा भावुक रहा क्योंकि हममें से कोई भी इतनी सुन्दर जगह को छोड़कर नहीं जाना चाहता था। लेकिन आगे बढ़ते रहना इंसान की प्रवृत्ति है। लिहाजा हमने एक कार किराए पर ली और कारगिल-द्रास-श्रीनगर-जम्मू-होते हुए वापस दिल्ली पहुंच गए। यह एक यादगार यात्रा का अंत था।

गति प्रबल पैरों में भारी
फिर क्यों रहूँ दर-दर खड़ा
जब आज मेरे सामने
है रास्ता इतना पड़ा
जब तक ना मंजिल पा सकूँ
तब तक ना मुझे विराम है
चलना हमारा काम है।

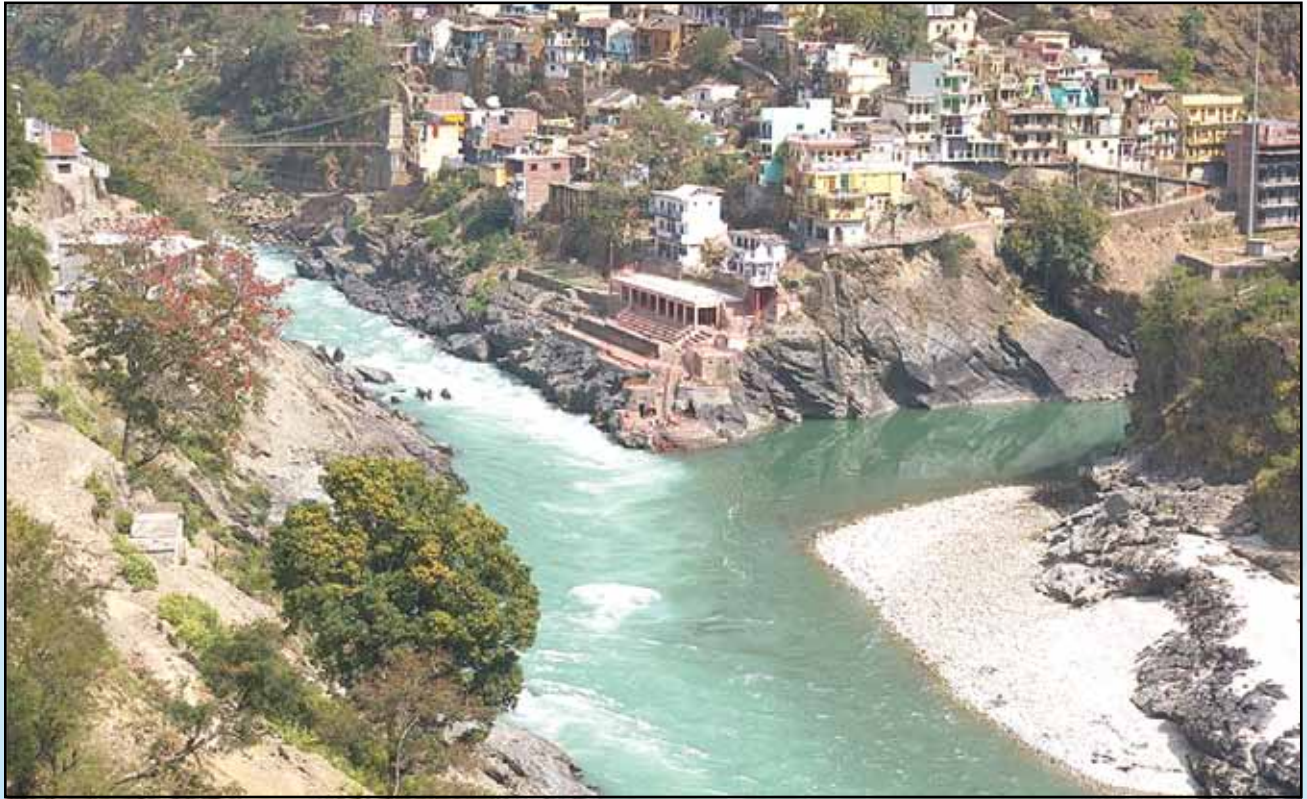
-शिव मंगल सिंह 'सुमन'

जो सोचता है कर पायेगा, वह कर पाता है
और जो नहीं कर पाने की सोचता है,
वह नहीं कर पाता है
यह एक अनवरत निर्विवाद नियम है

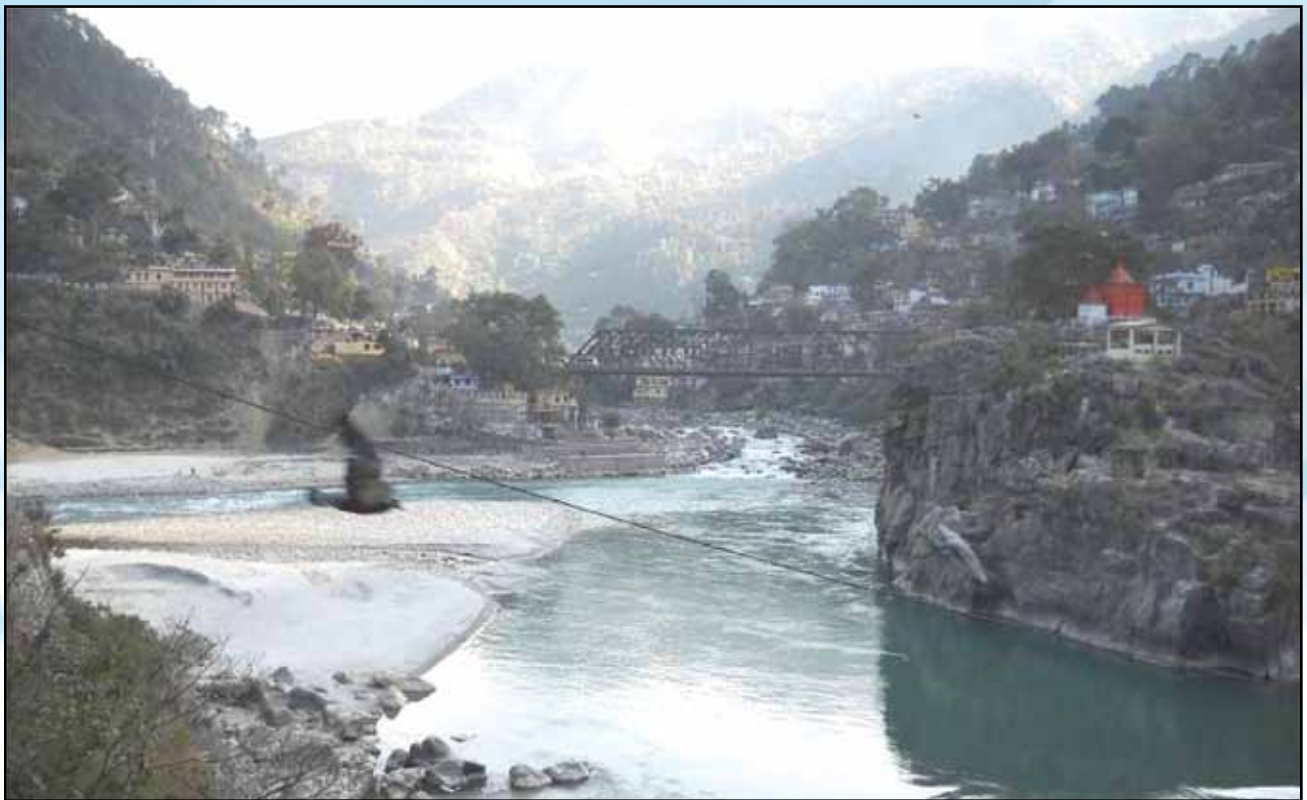
- पालो पिकासो

विचार मग्न..





भागीरथी-अलकनन्दा नदी का संगम (देवप्रयाग)



अलकनन्दा-पिण्डर नदी का संगम (कर्णप्रयाग)

हिन्दी साहित्य ?



डॉ० आशुतोष शर्मा

वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन एवं लेखा)

कुछ दिन पहले मेरे एक अहिन्दी भाषी मित्र ने पूछा कि किसी अच्छी हिन्दी साहित्य पुस्तक का नाम मैं बताऊँ। मैंने तुरन्त प्रेमचन्द की कुछ पुस्तकों के बारे में उन्हें बताया। वह बोले कुछ और नई रचनाएँ ? मैंने सोचना शुरू किया तो दिमाग पर बहुत जोर डालने के बाद भी 70 के दशक के आगे नहीं जा पाया। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। हिन्दी के पाठक बहुत बढ़ गए हैं, साक्षरता में वृद्धि हुई है, समाचार पत्र व हिन्दी टीवी चैनलों की भरमार है। ऐसे में कालजयी साहित्य कहाँ गया। आखिरी कृति शायद श्री लाल शुक्ल कृत राग दरबारी थी, जो साठ के दशक के अन्त में लिखी गई थी।

मैंने बाजार का रूख किया और कुछ प्रमुख दुकानों पर जाकर पता करने की कोशिश की तो एक और तथ्य सामने आया। आजकल अधिकतर कृतियाँ सजिल्द (Hard Back) में हैं व काफी महंगी हैं। पेपरबैक में सिर्फ पुरानी किताबें ही हैं। यह तो अंग्रेजी साहित्य से बिलकुल उलट है जहाँ नये उपन्यास पेपरबैक में भरे पड़े हैं। दुकानदार कुछ साहित्य प्रेमी लग रहा था तो उसने कहा, “आजकल हिन्दी में साहित्य सृजन पाठकों के लिए नहीं बल्कि पुस्तकालयों के लिए किया जाता है इसलिए सिर्फ लाइब्रेरी संस्करण ही छपते हैं”। धन्य हैं हम, पाठक हो न हो पुस्तकालय में किताबें सजती रहेंगी। यही हाल पत्रिकाओं का है धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका, नवनीत इत्यादि सब काल समर्पित हो चुके हैं।

बिना अपनी भाषा के, साहित्य के समाज एक विकृत अवरूप धारण कर लेता है। पाठक तो हैं पर, साहित्य के नहीं। ऐसे में सुधी हिन्दी पाठक गए कहाँ, ये मैं सोच रहा हूँ, आपको मिलें तो बताइएगा, तब तक मैं एक बार फिर गोदान पढ़ लूँ।



पढ़ने लिखने का दिमाग के लिए वही महत्व है, जो कसरत का शरीर के लिए है।

—रिचर्ड स्टील

खंडन करने, विरोध करने, बर्चित या बहस करने के लिए मत पढ़ो, बस आकलन करने और समझाने के लिए पढ़ो।

—फ्रांसिस बेकन

हिन्दी पत्र-व्यवहार में अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रयोग



विनोद कुमार शर्मा,
लेखाधिकारी

हिन्दी भाषा में पत्र-व्यवहार करना उतना ही सरल है, जितना कि अंग्रेजी या अन्य किसी क्षेत्रीय भाषा में। आवश्यकता इस बात की है, कि सरकारी कार्यालयों में वह हिन्दी लिखी जाये जिसके लिए किसी को भी कोई शब्दकोष न देखना पड़े, अर्थात् भाषा चुस्त एवं प्रवाहमयी हो। प्रयोग की जाने वाली भाषा इतनी सरल होनी चाहिए कि किसी शब्द विशेष के लिए कठिनाई होने पर ही शब्दकोष या शब्दावलियाँ देखने की आवश्यकता न पड़े।

हिन्दी भाषा को पत्र-व्यवहार के रूप में प्रयोग करने के लिए यदि किसी शब्द का हिन्दी पर्याय ज्ञात नहीं है तो अटकने की आवश्यकता नहीं है। ऐसी स्थिति में हिन्दी के वाक्य में अंग्रेजी के शब्द को ही देवनागरी में लिखते हुए तनिक भी संकोच नहीं करना चाहिए। यदि भाषा को लिखने के लिए हमें कदम-कदम पर शब्दकोष की आवश्यकता पड़ती है, तो ऐसी भाषा प्रवाहमयी कभी भी नहीं हो सकती। अतः आधिकारिक कार्यों में देवनागरी लिपि को अपनाया जाना चाहिए। यदि किसी स्थान पर अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है, तो अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि वह मूल शब्दों के भाव को अभिव्यक्त करे तथा उसके कारण अर्थ का अनर्थ न हो जाए। ऐसी स्थिति में हमें अंग्रेजी, उर्दू और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को लोकप्रिय एवं प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने में संकोच नहीं करना चाहिए। कुछ लोगों का ऐसा मानना कि पत्र-व्यवहार में शुद्ध हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए, उचित नहीं है। इस तरह के विचार हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में बाधक हैं। शुद्ध हिन्दी का प्रयोग केवल साहित्यिक उद्देश्यों के लिए किया जाना चाहिए। कार्यालय में पत्र-व्यवहार करते समय साहित्यिक हिन्दी का प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है।

अंग्रेजी एवं उर्दू के ऐसे सैकड़ों शब्द हैं जिनको हिन्दी में पत्र-व्यवहार करते समय आवश्यकता पड़ने पर अत्यन्त सरलता से अपनाया जा सकता है। देवनागरी लिपि में ऐसे कुछ शब्द जो कि हिन्दी में पत्र-व्यवहार करते समय अंग्रेजी के विकल्प के रूप में अपनाये जा सकते हैं, निम्नलिखित हैं:-

हिन्दी शब्द	देवनागरी (अंग्रेजी विकल्प)
शक्तियों का प्रत्यायोजन	डेलीगेशन ऑफ पावर्स
विवरण लेखा पुस्तिका	डिटेल बुक
अधिवास	डोमिसाइल
दोहरी प्रविष्टि प्रणाली	डबल एन्ट्री सिस्टम
उपादान	ग्रेज्युटी
बीजक	इनवायस
संचलन रजिस्टर	मूवमेन्ट रजिस्टर
परिवीक्षाधीन	प्रोबेशन
भविष्य निधि	प्रोविडेन्ट फण्ड
वसूली	रिकवरी
अभिलेख	रिकार्ड

समीक्षा	रिव्यू
माँग की अनुसूची	शिड्यूल ऑफ डिमान्ड्स
वाणिज्यक	कमर्शियल
प्रलेख	डॉक्युमेन्ट
अनुपूरक बजट	सप्लीमेन्ट्री बजट
प्रमाण-पत्र	सर्टिफिकेट
कार्यभार	चार्ज
रूपान्तरित मूल्य	कम्प्यूटेड वैल्यु
संकलनकर्ता	कम्पाइलर
निगम कर	कॉरपोरेशन टैक्स
प्रावरण-पत्र	कवर नोट
प्रावरण सूची	कवरींग लिस्ट
विलेख	डीड
करार विलेख	डीड ऑफ एग्रीमेन्ट
दूरभाष	टेलिफोन
तुलना पत्र	बैलेन्स शीट
अग्रिम	एडवान्स
वैयक्तिक खाता	पर्सनल एकाउन्ट
अभ्यर्पण मूल्य	सरेन्डर वैल्यु
कोटि उन्नयन	अपग्रेड
कर्मशाला	वर्कशॉप
प्रमाणक	वाऊचर
सचिव	सेक्रेट्री
जनसम्पर्क	पब्लिक रिलेशन

उपर्युक्त के अतिरिक्त चालान, बिल, ड्राफ्ट, प्रोटोकॉल, ओवरड्राल, ऑफर, नोटिस, हाईटेक, डिजिटल आदि अंग्रेजी शब्दों को हिन्दी में पत्र व्यवहार करते समय प्रयोग किया जा सकता है।

देवनागरी लिपि में हिन्दी के अंग्रेजी विकल्प का प्रयोग करने के साथ ही उर्दू या अन्य भाषाओं में अनेकों लोकप्रिय एवं प्रचलित शब्द ऐसे हैं, जिनको हिन्दी में पत्र-व्यवहार करते समय सरलता से अपनाया जा सकता है। ऐसे कुछ शब्दों का उल्लेख निम्नलिखित है:-

हिन्दी शब्द	लोकप्रिय उर्दू या अन्य भाषा का शब्द
न्यायालय	कचहरी, कोर्ट
प्रकरण	मामला
कार्यालय	दफ्तर
स्वीकृति	मंजूरी
निरस्त	खारिज़
वैधानिक	कानूनी
वाद	मुकदमा
अवकाश	छुट्टी
आवश्यकता	जरूरत
आपत्ति	ऐतराज

संकेत	इशारा
निर्णय	फैसला
कारण	वज़ह
साक्ष्य	सबूत
उत्तर	जवाब
भाग	हिस्सा
शेष	बकाया
अनुसार	मुताबिक
अभिलेख	दस्तावेज
अभिप्राय	मतलब

उपर्युक्त के अतिरिक्त भी अनेकों शब्दों जैसे-गुजारा भत्ता, बयान, तब्दीली आदि का हिन्दी पत्र-व्यवहार में आवश्यकता पड़ने पर प्रयोग किया जा सकता है।

इस प्रकार यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी में सरकारी पत्र-व्यवहार करने में कहीं भी किसी भी स्तर पर कोई कठिनाई नहीं है तथा पत्र-व्यवहार करते समय हमें बार-बार शब्दकोष देखने या फिर अटकने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। आज के समय में अशिक्षित व्यक्ति भी ऑफिस, ऑफिसर, पेपर, फॉर्म, मशीन, चेयर, टेबिल, ट्रेन, स्टेशन, बस स्टॉप, श्री व्हीलर, कम्प्यूटर, फैन, गीजर आदि सैकड़ों अंग्रेजी शब्दों के अभिप्राय को अच्छी तरह से समझता है। ऐसी स्थिति में यदि हम ट्रेन को लोहपथगामिनी तथा कैलकुलेटर को संगणक शब्दों से अनुवाद करके हिन्दी के प्रयोग को हतोत्साहित करते रहेंगे, तो यह राजभाषा हिन्दी का अपमान है। हम सबको इन भ्रान्तियों में न पड़कर हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना सक्रिय योगदान देकर हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

समय का महत्व



एन०के० सुब्रह्मणियन,
वरिष्ठ लेखाकार

जरा सोचिये, यदि ऐसा कोई बैंक होता जो प्रतिदिन सुबह आपके खाते में ₹ 86,400/- जमा दिखाता, परन्तु प्रतिदिन रात को आपके द्वारा उस दिन छोड़े शेष को जिसे आप द्वारा उस दिन उपयोग न किया गया हो, शून्य कर देता, ऐसे में आप क्या करते ? जी हाँ आप पूरा पैसा निकाल कर उसी दिन उपयोग कर लेते।

इसी प्रकार का बैंक हम सबके पास है, जिसका नाम है “समय”। प्रत्येक सुबह वह हमारे 86400 पल (सेकेण्ड) जमा करता है एवं रात को वो पल जो सत्कर्म हेतु हमारे द्वारा उपयोग में न लाये गये हों, उन्हें नष्ट समझकर अपलिखित कर देता है। ये बकाया अग्रेषित नहीं करता। प्रतिदिन वो हमारे लिए नया खाता खोलता है एवं रात को समाप्त कर देता है। यदि हम अपने खाते में जमा पलों का उपयोग नहीं करते हैं, तो ये हमारा नुकसान है। अर्थात् उन पलों का उपयोग कल नहीं किया जा सकता, जो पल आपके खाते में आज शेष हैं। आपको वर्तमान में आज के जमा पलों में ही जीना है। अतः इसे स्वस्थ, समृद्धि एवं खुशहाली के लिए खर्च करो। समय तेजी से गुजर रहा है, आज इसे अधिक से अधिक उपयोग करो।

- | | |
|--|---|
| यदि एक साल की कीमत जाननी हो, तो | - परीक्षा में अनुत्तीर्ण छात्र से पूछो। |
| यदि एक महीने की कीमत जाननी हो, तो | - समय से पहले जन्मे हुए बच्चे की माँ से पूछो। |
| यदि एक हफ्ते की कीमत जाननी हो, तो | - साप्ताहिक पत्रिका के लेखक से पूछो। |
| यदि एक घण्टे की कीमत जाननी हो, तो | - मिलने के लिए इन्तजार करने वाले मित्र से पूछो। |
| यदि एक मिनट की कीमत जाननी हो, तो | - उस व्यक्ति से पूछो जिसकी गाड़ी छूट गई हो। |
| यदि एक सेकेण्ड की कीमत जाननी हो, तो | - उससे पूछो जो तुरन्त दुर्घटना से बचा हो। |
| यदि एक मिली सेकेण्ड की कीमत जाननी हो, तो | - उस खिलाड़ी से पूछो जो ओलिम्पिक में पदक से वंचित रह गया हो |

अतः प्रत्येक पल को मूल्यवान समझो एवं उसका सदुपयोग करो।



योग निद्रा-तनाव से मुक्ति



अरुण कुमार चौधरी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

(सेवानिवृत्त)

तनाव! उफ, तनाव! यह शब्द आज के आधुनिक युग के मनुष्यों के जीवन का अंग बन चुका है। परिणामस्वरूप तथाकथित आधुनिक युग के मनुष्यों को विभिन्न व्याधियाँ जैसे-उच्च एवं निम्न रक्तचाप, डायबिटीज, अर्धकपारी (माइग्रेन), अनिद्रा, आंत्र घाव पीड़ा, कैंसर, सोराईसिस, नशा, मिरगी आदि घेर रही हैं।

आज के युग में जीवन के संघर्षों में थोड़ा बहुत तनाव का होना तो लाजमी है, परन्तु तनाव के समुद्र से कैसे बचा जाय? विश्वभर में मनोचिकित्सकों एवं शोधकर्ताओं द्वारा इस क्षेत्र में अनेकों शोध किये गये। कैसे चिन्ता एवं मानसिक तनाव से मुक्ति पायी जाये? इसका उत्तर औषधियों में नहीं है। मनुष्यों को इस कष्ट से मुक्ति दिलाने के लिए औषधियों पर व्यय एवं उसके पार्श्व प्रभाव (साइड इफेक्ट) को अनदेखा नहीं किया जा सकता।

आधुनिक युग के चिकित्सकों ने मनुष्यों के मन-मस्तिष्क पर चिन्ता एवं तनाव के कुप्रभाव को स्वीकारा है, परन्तु हमारे प्राचीन मनीषियों ने हजारों वर्ष पहले शिथिलीकरण द्वारा तनाव व चिन्ता से मन-मस्तिष्क को मुक्त करने की विधि निकाली थी। वर्तमान युग में इस विधि को व्यवहार में लाने की आवश्यकता है। शोधकर्ता ने सोचने की प्रक्रिया, भावुकता एवं तनाव को दूर करने के लिए विभिन्न उपाय जैसे-सम्मोहन या हिप्नोटिज्म, ध्यान एवं मन को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न उपाय सुझाये हैं। स्व-निर्देश (ऑटो इंस्ट्रक्शन) इनमें से एक है, जो पाश्चात्य देशों में अधिक प्रचलित है। इस क्षेत्र में डा० जॉन सुल्ज, जर्मन वैज्ञानिक एवं हिप्नोटिज्म पर शोधकर्ता का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने देखा कि स्व-निर्देश (ऑटो इंस्ट्रक्शन) या स्व-सुझाव द्वारा व्यक्ति अपने मांसपेशियों एवं स्नायुतंत्र (नर्वस सिस्टम) को तनाव मुक्त करके शरीर और मस्तिष्क को शान्त कर सकता है। परन्तु हमारे प्राचीन मनीषियों ने जो विधा 'शिथिलीकरण' की दी थी, उसमें 'योग निद्रा' की उत्पत्ति हुई।

शारीरिक एवं मानसिक शान्ति के लिए योग निद्रा सबसे अच्छा उपाय है। यह अपने आपमें बहुत कुछ है। मेरे स्वीडन प्रवास काल में मैंने स्केन्डेनेवीयन योगा एण्ड मेडिटेशन स्कूल में योग निद्रा पर विभिन्न शोधों एवं परिणामों को देखा, जिन्होंने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया।

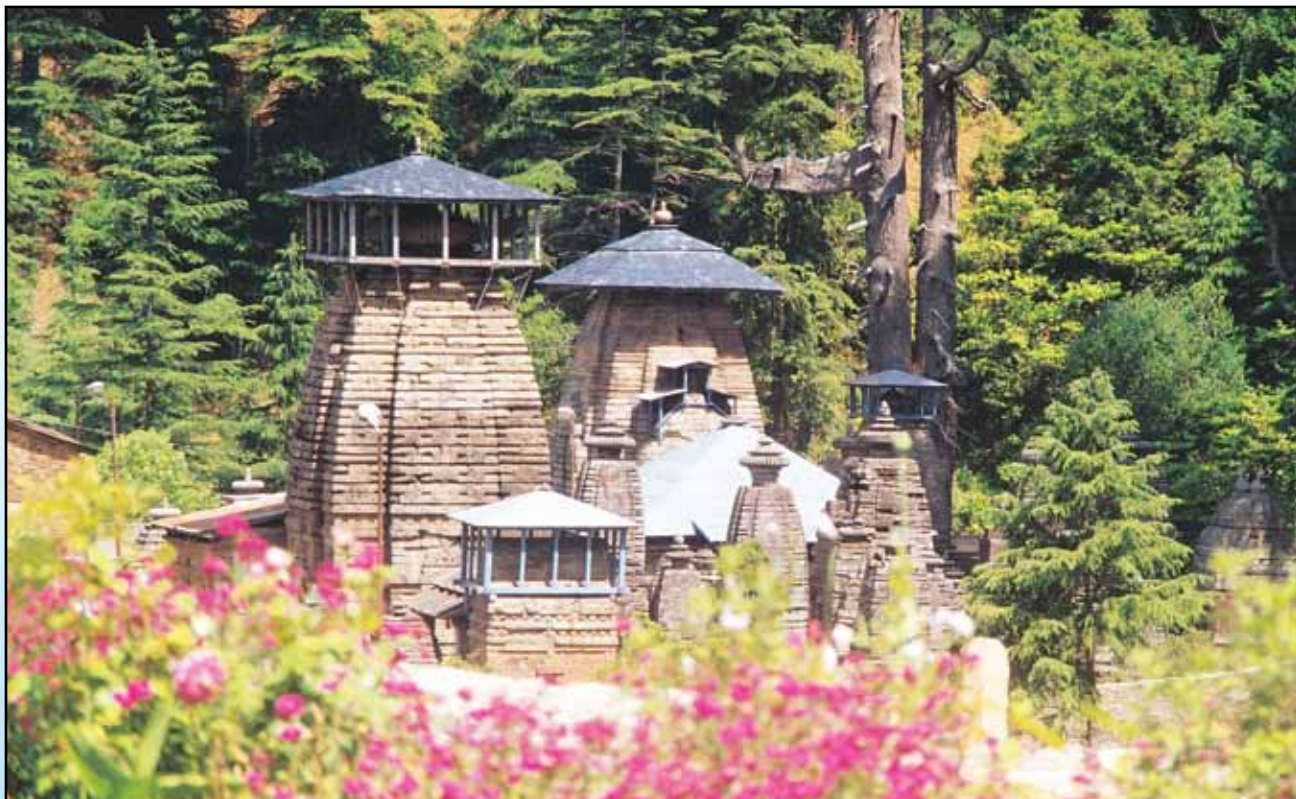
जब आप योग निद्रा का अभ्यास करें, तो शान्त कमरे में मस्तिष्क को उत्तर दिशा में रखकर चित लेट जायें। आपके वस्त्र ढीले हों। किसी साधारण नरम सेज पर ही लेटें एवं शरीर को हल्की चादर से ढकें। अच्छा होगा यदि आप भूमि पर कम्बल बिछाकर लेटें। यदि आपको नींद आने की आदत है तो हाथ और पांव को खुला छोड़ दें। आंखें हल्की सी बन्द करें, फिर दोनों पांव के बीच की दूरी लगभग एक फुट रखें तथा दोनों हथेलियां खुली अवस्था में पेट से लगभग आधा फुट दूर रखें। सिर, गला एवं रीढ़ की हड्डी, कलाई, हाथ एवं कंधे को एवं बांये हाथ को भी तनाव मुक्त करें। इसी क्रम में नाभी दाहिनी किडनी एवं बांयी किडनी, बड़ी आंत एवं छोटी आंत व सम्पूर्ण पेट को तनाव मुक्त अनुभव करें। वक्ष पर ध्यान केन्द्रित कर क्रमशः दाहिने एवं बांये फेफड़े व हृदय को कल्पना शक्ति से तनाव मुक्त करें। इसी प्रकार गला, चेहरा, आँख

की पुतलियाँ एवं मस्तिष्क को भी तनाव मुक्त करें। दृष्टाभाव से विश्व ब्रह्माण्ड की विशालता को देखें, अनुभवन करें। इस प्रकार आप देखेंगे कि आप अर्द्ध-निद्रा की स्थिति में पहुँच चुके हैं। आपको सोना नहीं है। जाग्रत रहते हुए 'योग निद्रा' का अनुभव करना है। योग निद्रा के दौरान किसी भी प्रकार का विचार उभर सकता है। कृपया विचारों में न उलझें। ये विचार बादलों की तरह आयेंगे और चले जायेंगे। लगभग 15 मिनट के बाद अंगड़ाई लेकर उठें, आंखें खोलें एवं अपनी सीट पर बैठ जायें। प्रतिदिन अभ्यास के द्वारा आप अपने मस्तिष्क स्वतः आज्ञा चक्र (पिनीयल ग्लैंड) के सम्पर्क में आ जाते हैं। आज्ञा चक्र (पिनीयल ग्लैंड) एवं सहस्रार चक्र (पिट्यूइटरी ग्लैंड) एक दूसरे के पूरक हैं। ध्यानरस्त अवस्था में हारमोन्स का स्राव होता है जो अवचेतन मस्तिष्क को प्रभावित करता है।

यहां पर महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्येक प्रकार के ध्यान को नियमित व प्रतिदिन किया जाना चाहिए जिससे कि इससे स्पष्ट प्रभाव को देखा जा सके। यह अत्यधिक शान्ति प्रदान करेगी तथा बहुत सारी व्याधियों से मुक्ति दिलायेगी।

शोधकर्ताओं ने देखा कि 'योग निद्रा' का प्रभाव अन्य सुझावजनित तनाव मुक्ति, सम्मोहन या ध्यान से अधिक लाभदायक हैं। योग निद्रा के दौरान सम्पूर्ण मस्तिष्क में 'अल्फा तरंगें' व्याप्त रहती हैं। जबकि अन्य विधियों में तरंगें यहां-वहां रहती हैं। इसके अतिरिक्त योग निद्रा के समय अल्फा तरंगें स्थिर रहती हैं। यह भी देखा गया है कि मस्तिष्क के दोनों अर्द्धभागों में ई0ई0जी0 (इलेक्ट्रोइनसीफिलोग्राम) का सन्तुलन अच्छा रहता है। अतः रक्तचाप साधारण रहता है एवं रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है व मस्तिष्क तनावमुक्त रहता है। शरीर के सभी अंग एवं ग्रंथियों को शक्ति मिलती है जो प्राकृतिक नींद के द्वारा उपलब्ध नहीं है। यह सिद्ध किया गया है कि 15 मिनट की योग निद्रा छः घंटे की नींद के समान है।





जागेश्वर मन्दिर (अल्मोड़ा)



विश्वनाथ मन्दिर (उत्तरकाशी)



श्री विनोद राय, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा निर्माणाधीन आवासीय परिसर, कौलागढ़ का निरीक्षण





निर्माणाधीन आवासीय भवन, कौलागढ़



श्री अरविन्द अवस्थी, उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा कार्यालय (लेखा एवं हक0) का निरीक्षण